(६०) (भला बताओ तो) आकाशों को तथा धरती को किसने पैदा किया ? किसने आकाश से वर्षा की, फिर उससे हरे-भरे भव्य बाग़ उगाये ? इन बाग़ों के वृक्षों को तुम कदापि नहीं उगा सकते,[1] क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई पूजने योग्य भी है ?[2] बल्कि ये लोग हट जाते हैं (सीधे मार्ग) ।[3]

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنۢبِتُوا۟ شَجَرَهَآ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾

(६१) क्या वह जिसने धरती को निवास स्थली बनाया,[4] उसके मध्य नदियाँ प्रवाहित कर दीं,

أَمَّن جَعَلَ ٱلْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ

---

[1]यहाँ से पिछले वाक्य की व्याख्या तथा उसके तर्क प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि वही अल्लाह पैदा करने, जीविका प्रदान करने तथा व्यवस्था करने में अकेला है। उसका कोई साझी नहीं है। कहा, आकाशों को इतनी उँचाई पर तथा इतना सुन्दर बनाने वाला, उनमें आकर्षक तारामण्डल, प्रकाशवाले तारे एवं चलने वाले ग्रह बनाने वाला, उसी प्रकार धरती तथा उस पर पर्वत, नदियाँ, स्रोत, समुद्र, झरने, खेतियाँ तथा विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी आदि पैदा करने वाला तथा आकाश से वर्षा करके उसके द्वारा सुन्दर बाग़ उगाने वाला कौन है ? क्या तुम में से कोई ऐसा है जो धरती से वृक्ष ही उगाकर दिखा दे ? इन सबके उत्तर में मूर्तिपूजक कहते तथा स्वीकार करते थे कि यह सब कुछ करने वाला अल्लाह तआला है, जैसाकि क़ुरआन में अन्य स्थान पर है। उदाहरणार्थ, (*सूर: अल-अनकबूत-६३*)

[2]अर्थात इन सभी वास्तविकताओं के उपरान्त क्या अल्लाह के सिवाय कोई अन्य भी शक्ति ऐसी है जो पूजा के योग्य हो ? अथवा जिसने इनमें से किसी वस्तु की रचना की हो ? अर्थात कोई ऐसा नहीं जिसने कुछ बनाया हो अथवा पूजा के योग्य हो। أَمَّنْ का इन आयतों में भावार्थ यह है कि क्या वह शक्ति जो इन सभी वस्तुओं का बनाने वाला है, उस व्यक्ति की तरह है जो इनमें से किसी वस्तु के उत्पन्न करने का सामर्थ्य नहीं रखता ? (इब्ने कसीर)

[3]इसका दूसरा अनुवाद है कि वे लोग उसके समान तथा समतुल्य मानते हैं।

[4]अर्थात स्थिर तथा अचल, न हिलती है न डोलती है। यदि ऐसा होता तो धरती पर रहना ही असम्भव हो जाता। धरती पर बड़े-बड़े पर्वत बनाने का उद्देश्य भी धरती को हिलने-डुलने से रोकना ही है।

उसके लिये पर्वत बनाये एवं दो समुद्रों के मध्य रोक बना दी,[1] क्या अल्लाह के साथ कोई अन्य पूजने योग्य भी है ? बल्कि उनमें से अधिकतर कुछ जानते ही नहीं।

خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

(६२) असहाय की पुकार को जबकि वह पुकारे कौन स्वीकार करके संकट को दूर कर देता है[2] तथा तुम्हें धरती का उत्तराधिकारी बनाता है ?[3] क्या अल्लाह (तआला) के साथ अन्य कोई पूज्य है ? तुम बहुत कम शिक्षा ग्रहण करते हो।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६३) कौन है वह जो तुम को थल तथा जल के अंधकारों में मार्ग दिखाता है[4] तथा जो अपनी कृपा से पहले ही शुभसूचना देने वाली वायु चलाता है ?[5] क्या अल्लाह के साथ कोई

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ

---

[1]इसकी व्याख्या के लिए देखें सूरः अल- फुरक़ान-५३ की व्याख्या।

[2]अर्थात वही अल्लाह है जिसे संकट के समय पुकारा जाता है तथा दुखों के समय जिससे आशायें लगायी जाती हैं। مُضْطَرّ (असहाय) उसकी ओर आकर्षित होता तथा बुराई को वही दूर करता है। और देखिए सूरः अल-इस्रा-६७ तथा सूरः अल-नमल-५३

[3]अर्थात एक सम्प्रदाय के पश्चात दूसरा सम्प्रदाय, एक समुदाय के पश्चात दूसरा समुदाय तथा एक जाति के पश्चात दूसरी जाति पैदा करता है। वरन् यदि वह सबको एक ही समय में पैदा करता तो धरती भी तंगी की शिकायत करती, व्यवसाय में भी कठिनाई होती तथा ये सब एक-दूसरे की टाँग खींचने में ही व्यस्त रहते। अर्थात एक के पश्चात दूसरे मनुष्यों को पैदा करना तथा एक को दूसरे का उत्तराधिकारी बनाना, यह भी उसकी अति कृपा है।

[4]अर्थात आकाशों पर तारों को प्रकाश प्रदान करने वाला कौन है जिनसे तुम अंधकार में मार्ग पाते हो ? पर्वतों तथा घटियों का बनाना वाला कौन है ? जो एक-दूसरे के लिये सीमाओं का भी कार्य करते हैं तथा मार्गों के संकेत का भी।

[5]अर्थात वर्षा से पूर्व ठंडी हवायें जो वर्षा की सूचक ही नहीं होतीं हैं बल्कि उनसे सूखा के मारे हुए लोगों में खुशी की लहर भी दौड़ जाती है।

رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

अन्य देवता भी है ? जिन्हें ये साझी बनाते हैं, उन सबसे अल्लाह (तआला) श्रेष्ठ है ।

اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) कौन है वह जो सृष्टि की प्रथम बार रचना करता है फिर उसे लौटायेगा[1] तथा जो तुम्हें आकाश तथा धरती से जीविका प्रदान कर रहा है,[2] क्या अल्लाह के साथ अन्य कोई देवता भी है ? कह दीजिए कि यदि सच्चे हो तो अपना प्रमाण लाओ ।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

(६५) कह दीजिए कि आकाश वालों में से एवं धरती वालों में से अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी परोक्ष (की बातें) नहीं जानता ।[3] उन्हें तो

---

[1]अर्थात क़ियामत के दिन तुम्हें पुनः जीवन प्रदान करेगा ।

[2]अर्थात आकाश से वर्षा उतार कर धरती से उसके छिपे कोष (अनाज तथा मेवे) पैदा करता है तथा इस प्रकार आकाश तथा धरती की विभूतियों के द्वार खोल देता है ।

[3]अर्थात जिस प्रकार उपरोक्त विषयों में अल्लाह तआला अकेला (अद्वितीय) है, उसका कोई साझी नहीं उसी प्रकार परोक्ष के ज्ञान में भी वह अकेला है । उसके अतिरिक्त किसी को भी परोक्ष का ज्ञान नहीं । नबियों तथा रसूलों को भी उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला प्रकाशना तथा ईश्वरीय प्रेरणा द्वारा उनको बता देता है तथा जो ज्ञान किसी के बताने से प्राप्त हो उसके ज्ञाता को परोक्षज्ञ नहीं कहा जाता । परोक्षज्ञ तो वह है जो विना किसी माध्यम के स्वयं प्रत्येक वस्तु का ज्ञान रखे, प्रत्येक वास्तविकता से परिचित हो तथा गुप्त से गुप्त वस्तु भी उसके ज्ञान की परिधि से बाहर न हो । यह विशेषता केवल तथा मात्र अल्लाह ही की है, इसलिए केवल वही गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञाता है । उसके अतिरिक्त पूरे जगत में कोई भी गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञाता नहीं है । आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि जो व्यक्ति यह विचार रखता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान रखते हैं, उसने अल्लाह पर वहुत बड़ा आक्षेप लगाया, इसलिए कि वह फ़रमा रहा है कि "आकाश तथा धरती में परोक्ष (गुप्त बातों) का ज्ञान केवल अल्लाह को है ।" (सहीह बुख़ारी संख्या ४८५५, सहीह मुस्लिम संख्या २८७, तथा अल-तिर्मिज़ी संख्या ३०६८) आदरणीय क़तादः फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने तारों को तीन उद्देश्य से उत्पन्न किया : आकाश की शोभा, मार्ग बताने का साधन तथा शैतानों को मारने के लिए । परन्तु अल्लाह के आदेशों

وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

यह भी ज्ञात नहीं कि वे कब पुनर्जीवित किये जायेंगे ।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُم مِّنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾

(६६) बल्कि आख़िरत के विषय में उनका ज्ञान समाप्त हो चुका हैं ।[1] बल्कि यह उसकी ओर से संदेह में हैं । बल्कि यह उससे अंधे हैं ।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) काफ़िरों ने कहा कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तथा हमारे पूर्वज भी क्या हम फिर निकाले जायेंगे ।

से अनभिज्ञ लोगों ने उनसे गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञान प्राप्त करने (ज्योतिष) का ढ़ोंग रच लिया है । जैसे कहते हैं, जो अमुक-अमुक ग्रह के समय विवाह करेगा तो यह होगा, अमुक-अमुक ग्रह के समय यात्रा करेगा तो ऐसा-ऐसा होगा, अमुक-अमुक ग्रह में जन्म लेगा तो ऐसा-ऐसा होगा इत्यादि-इत्यादि, यह सब ढ़ोंग हैं । उनके अनुमान के विरूद्ध अधिकतर होता रहता है । ग्रहों, पक्षियों तथा पशुओं से गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त हो सकता है जबकि अल्लाह का निर्णय तो यह है कि आकाशों तथा धरती में अल्लाह के अतिरिक्त कोई गुप्त बातों को नहीं जानता ? (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात उनका ज्ञान आख़िरत के घटित होने का समय जानने में असमर्थ है । अथवा उन का ज्ञान आख़िरत के विषय में समान है, जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय जिब्रील के पूछने पर कहा था "क़ियामत के विषय में मैं प्रश्न किया जाने वाला (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी प्रश्नकर्ता (आदरणीय जिब्रील) से अधिक ज्ञान नहीं रखता ।" अथवा यह अर्थ है कि उनका ज्ञान पूर्ण हो गया, इसलिए कि उन्होंने क़ियामत के विषय में किये गये वचनों को अपनी आँखों से देख लिया, अर्थात यह ज्ञान अब उनके लिए लाभदायक नहीं है, क्योंकि दुनिया में वे इसे झुठलाते रहे थे । जैसे फ़रमाया :

﴿أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا ۖ لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ﴾

"क्या ख़ूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे समक्ष उपस्थित होंगे, किन्तु आज तो ये अत्याचारी लोग स्पष्ट गुमराही में पड़े हुए हैं ।" (सूर: मरियम-३८)

[2]अर्थात दुनिया में आख़िरत के विषय में संदेह में हैं बल्कि अंधे हैं कि भ्रष्ट बुद्धि तथा भ्रष्ट ज्ञान के कारण आख़िरत पर विश्वास से वंचित हैं ।

لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

(६८) हमें तथा हमारे पूर्वजों को बहुत पहले से ये वचन दिये जाते रहे हैं। कुछ नहीं, यह तो मात्र पूर्वजों की काल्पनिक कथायें हैं।[1]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

(६९) कह दीजिए कि धरती में तनिक चल-फिर कर देखो तो सही कि पापियों का कैसा परिणाम हुआ ?[2]

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा आप उनके विषय में चिन्तित न हों तथा उनके षड़यन्त्रों से संकुचित हृदय न हों।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा कहते हैं कि यह वचन कब है यदि सच्चे हो तो बतला दो।

قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) उत्तर दीजिए कि शायद कुछ वे वस्तुयें जिनकी तुम शीघ्रता मचा रहे हो, तुम से अत्यन्त निकट हो गई हों।[3]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा निःसंदेह आपका प्रभु सभी लोगों पर अत्यन्त कृपा वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते हैं।[4]

---

[1]अर्थात इसमें वास्तविकता कोई नहीं, बस एक-दूसरे की सुनकर ये कहते चले आ रहे हैं।

[2]यह उन काफ़िरों के कथन का उत्तर है कि प्राचीन समुदायों को देखो कि क्या उन पर अल्लाह का प्रकोप नहीं आया, जो पैग़म्बरों की सत्यता का प्रमाण है। इसी प्रकार क़ियामत तथा उसके जीवन के विषय में भी हमारे रसूल जो कहते हैं, निःसंदेह सत्य है।

[3]इससे तात्पर्य बद्र के युद्ध की वह यातना है, जो हत्या तथा बन्दी किये जाने के रूप में काफ़िरों को पहुँचा अथवा क़ब्र की यातना है। رَدِفَ निकट के अर्थ में है, जैसे सवारी की पिछली सीट पर बैठने वाले को رَدِيف कहा जाता है।

[4]अर्थात यातना में देरी, यह भी अल्लाह की दया तथा कृपा का एक भाग है, परन्तु फिर भी लोग उससे मुख मोड़ कर कृतघ्नता व्यक्त करते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा निःसंदेह आपका प्रभु उन बातों को भी जानता है जिन्हें वे अपने हृदय में छिपा रहे हैं तथा जिन्हें प्रकट कर रहे हैं।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾

(७५) आकाश एवं धरती की कोई गुप्त वस्तु भी ऐसी नहीं है जो प्रकाशमय खुली किताब में न हो।[1]

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

(७६) निःसंदेह यह क़ुरआन इस्राईल की सन्तान के समक्ष उन अधिकतर बातों का वर्णन कर रहा है जिनमें ये मतभेद करते हैं।[2]

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा यह (क़ुरआन) ईमानवालों के लिए निःसंदेह मार्गदर्शन एवं कृपा है।[3]

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾

(७८) आपका प्रभु उनके मध्य अपने आदेश से (सभी) निर्णय कर देगा,[4] वह अत्यन्त प्रभावशाली एवं जानने वाला है।

---

[1]इससे तात्पर्य 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है। उन ही गुप्त वस्तुओं में उस प्रकोप का ज्ञान भी है जिसके लिए यह काफ़िर लोग शीघ्रता मचाते हैं। परन्तु उसका समय भी अल्लाह ने 'सुरक्षित पुस्तक' में लिख रखा है, जिसे केवल वही जानता है तथा जब वह समय आ जाता है जो उसने किसी समुदाय के विनाश के लिए लिख रखा है तो फिर उसे नाश कर दिया जाता है। यह निर्धारित समय के आने से पूर्व शीघ्रता क्यों करते हैं ?

[2]अहले किताब अर्थात यहूदी तथा इसाई विभिन्न सम्प्रदायों तथा गुटों में बट गये थे। उनके विश्वास भी एक-दूसरे से भिन्न थे। यहूदी आदरणीय ईसा का निरादर तथा अपमान करते थे तथा इसाई उनके सम्मान में अतिश्योक्ति, यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र बना दिया। क़ुरआन करीम ने उन्हीं के सन्दर्भ से ऐसी बातें वर्णन की हैं, जिन से सत्य स्पष्ट हो जाता है तथा यदि वे क़ुरआन के वर्णन की हुई सत्यता को स्वीकार कर लें तो उनकी आस्था से सम्बन्धित विरोध का समापन तथा उनके मतभेद एवं भिन्नता में कमी हो जाये।

[3]ईमानवालों को विशेष करना इसलिए कि वही क़ुरआन से लाभान्वित होते हैं। उन्हीं में वे इस्राईल की सन्तानें भी थीं जो ईमान ले आई थीं।

[4]अर्थात क़ियामत के दिन उनके आपसी मतभेद का निर्णय करके सत्य को असत्य से अलग कर देगा तथा उसके अनुसार बदला तथा दण्ड देने का प्रबन्ध करेगा, अथवा

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

(७९) अत: आप अल्लाह पर ही भरोसा रखें, नि:संदेह आप सत्य एवं खुले धर्म पर हैं ।[1]

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) नि:संदेह आप न मृतकों को सुना सकते हैं तथा न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं [2] जब कि वे पीठ फेर कर मुख मोड़े जा रहे हों ।[3]

उन्होंने अपनी किताबों में जो परिवर्तन किये हैं दुनिया ही में उनका पर्दा फाड़ करके उनके मध्य निर्णय कर देगा ।

[1]अर्थात अपनी समस्या उसी को समर्पित कर दें तथा उसी पर भरोसा करें, वही आपकी सहायता करने वाला है । एक तो इसलिए कि आप सत्य धर्म पर हैं, दूसरा कारण आगे आ रहा है ।

[2]यह उन काफ़िरों की चिन्ता न करने तथा केवल अल्लाह पर भरोसा रखने का दूसरा कारण है कि ये लोग मृत हैं, जो किसी की बात को सुनकर लाभ नहीं उठा सकते अथवा बहरे हैं, जो न सुनते हैं न समझते हैं तथा न मार्ग पाने वाले हैं । अर्थात काफ़िरों की उपमा मरे हुए व्यक्ति से दी जिन में संवेदन नहीं होता है न बोध तथा बहरों से, जो भाषण तथा शिक्षा सुनते हैं न अल्लाह की ओर आमन्त्रण को स्वीकार करते हैं ।

[3]अर्थात वे सत्य से पूर्णत: भागते एवं घृणा करते हैं, क्योंकि बहरा व्यक्ति अपने सामने भी कोई बात सुन नहीं पाता तो उस समय क्या सुन पायेगा जब मुख मोड़े तथा पीठ फेरे हुए हो । क़ुरआन करीम की इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि 'मृतक के सुनने' का विश्वास क़ुरआन के विरूद्ध है । मरे हुए किसी की बात नहीं सुन सकते । हाँ, इससे केवल वह अवस्थायें अलग हैं । जहाँ सुनने का स्पष्टीकरण किसी कथन से सिद्ध होगा । जैसे हदीस में आता है कि मुर्दे को जब गाड़ करके लोग वापस जाते हैं तो वह उनके जूतों की आहट सुनता है । (सहीह बुख़ारी संख्या ३३८, सहीह मुस्लिम संख्या २२०१) अथवा बद्र के युद्ध में मरे हुए काफ़िरों को जो बद्र के गढ़े में फेंक दिये गये थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सम्बोधित किया, जिस पर सहाबा ने कहा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) निर्जीव शरीरों से बात कर रहे हैं । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ये तुम से अधिक मेरी बातें सुन रहे हैं । अर्थात चमत्कारिक रूप से अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात मृत काफ़िरों को सुनवा दी । (सहीह बुख़ारी संख्या १३०७)

وَمَآ أَنتَ بِهَٰدِى ٱلْعُمْىِ عَن ضَلَٰلَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِـَٔايَٰتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा न आप अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से हटाकर मार्गदर्शन दे सकते हैं।[1] आप तो केवल उन्हें सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाये हैं फिर वे आज्ञाकारी हो जाते हैं।

وَإِذَا وَقَعَ ٱلْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ ٱلْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ ٱلنَّاسَ كَانُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा जब उनके उपर प्रकोप का वचन सिद्ध हो जायेगा,[2] हम धरती से उनके लिए एक पशु निकालेंगे जो उनसे बातें करता होगा[3] कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।[4]

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا

(८३) तथा जिस दिन हम प्रत्येक सम्प्रदाय में से उन लोगों के गुटों को जो हमारी आयतों

---

[1]अर्थात जिनको अल्लाह तआला सत्य देखने से अंधा कर दे, उनका आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस प्रकार मार्गदर्शन नहीं कर सकते जो उन्हें अभीष्ट स्थान अथवा ईमान तक पहुँचा दे।

[2]अर्थात जब पुण्य का आदेश देने वाला तथा बुराई से रोकने वाला नहीं रह जायेगा।

[3]यह दाब्ब: (विचित्र पशु) वही है जो क्रियामत के निकट होने के लक्षणों में से है, जैसाकि हदीस में है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "क्रियामत उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो उनमें एक जानवर का निकलना है" (सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ेतन, बाबु फ़ी आयातिल-लती तकूनु क़ब्लस्साअह) दूसरा कथन है, "सर्वप्रथम जो लक्षण प्रकट होगा वह है सूर्य का पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय होना तथा पूर्वान्ह से पहले जानवर का निकलना।" इन दोनों में से जो पहले प्रकट होगा दूसरा उसके शीघ्र पश्चात ही प्रकट हो जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

[4]यह जानवर के निकलने का कारण है। अर्थात अल्लाह तआला अपनी यह निशानी इसलिए दिखायेगा कि लोग अल्लाह की निशानियों अथवा आयतों (आदेशों) पर विश्वास नहीं करते। कुछ कहते हैं कि यह वाक्य वह जानवर अपने मुख से कहेगा। फिर भी उस जानवर के मनुष्यों से बात करने में कोई संदेह नहीं क्योंकि क़ुरआन ने इसको स्पष्ट रूप से कहा है।

مِّمَّن يُكَذِّبُ بِـَٔايَٰتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

को झुठलाते थे घेर-घार कर लायेंगे, फिर वे सबके सब अलग कर दिये जायेंगे ।[1]

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءُو قَالَ أَكَذَّبْتُم بِـَٔايَٰتِى وَلَمْ تُحِيطُوا۟ بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

(८४) जब सबके सब आ पहुँचेंगे तो अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि तुमने मेरी आयतों को इसके उपरान्त कि तुम्हें उनका पूर्ण ज्ञान न था, क्यों झुठलाया ?[2] तथा यह भी बताओ कि तुम क्या कुछ करते रहे ?[3]

وَوَقَعَ ٱلْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا۟ فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा इस के कारण कि उन्होंने अत्याचार किया था, उन पर बात सिद्ध हो जायेगी तथा वे कुछ न बोल सकेंगे ।[4]

أَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّا جَعَلْنَا ٱلَّيْلَ لِيَسْكُنُوا۟ فِيهِ وَٱلنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) क्या वे देख नहीं रहे हैं कि हमने रात्रि को इसलिए बनाया है कि वे इसमें विश्राम कर सकें तथा दिन को हम ने दिखलाने वाला बनाया है,[5] निःसन्देह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ (लक्षण) हैं, जो ईमान (तथा विश्वास) रखते हैं ।

---

[1]अथवा विभिन्न गुटों में बाँट दिये जायेंगे अर्थात व्यभिचारियों का गुट, शराबियों का गुट आदि । अथवा यह अर्थ है कि उनको रोका जायेगा अर्थात उनको इधर-उधर तथा आगे-पीछे होने से रोका जायेगा तथा सब को क्रम से लाकर नरक में फेंक दिया जायेगा ।

[2]अर्थात तुमने मेरे एकेश्वरवाद तथा आमन्त्रण के तर्क को समझने का प्रयत्न ही नहीं किया तथा उसके बिना ही मेरी आयतों को झुठलाते रहे ।

[3]कि जिसके कारण तुम्हें मेरी बातों पर विचार करने का अवसर ही नहीं मिला ।

[4]अर्थात उनके पास कोई बहाना न होगा कि जिसे वे प्रस्तुत कर सकें । अथवा क़ियामत की भयानकता के कारण बोलने की शक्ति से ही वंचित होंगे । कुछ के निकट यह उस समय की अवस्था का वर्णन है जब उनके मुख पर मोहर (मुद्रा) लगा दी जायेगी ।

[5]ताकि वे उसमें जीविका अर्जन के लिए दौड़-धूप कर सकें ।

وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा जिस दिन नरसिंघा फूँका जायेगा तो सबके सब आकाशों वाले तथा धरती वाले घबरा उठेंगे[1] परन्तु जिसे अल्लाह चाहे।[2] तथा सारे के सारे विनीत (एवं विवश) होकर उसके समक्ष उपस्थित होंगे।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा आप पर्वतों को अपने स्थान पर स्थिर समझते हैं परन्तु वे भी बादल (मेघ) की भाँति उड़ते फिरेंगे।[3] यह है रचना अल्लाह की जिसने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया है,[4] जो कुछ तुम करते हो उससे वह भली-भाँति परिचित है।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُم مِّن فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ﴿٨٩﴾

(८९) जो व्यक्ति पुण्य के कर्म लायेगा उसे उससे भी उत्तम बदला मिलेगा, तथा वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय होंगे।[5]

---

[1] صور से तात्पर्य वही नरसिंघा है जिसमें इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम अल्लाह के आदेश से फूंक मारेंगे। यह फूंक दो अथवा दो से अधिक होंगी। प्रथम फूंक में सम्पूर्ण जगत घबराकर मूर्छित हो जायेगा, दूसरी फूंक में मर जायेगा तथा तीसरी फूंक में सभी लोग क़ब्रों से जीवित होकर खड़े हो जायेंगे तथा कुछ के निकट चौथी फूंक होगी जिससे सभी लोग हश्र के मैदान में एकत्रित हो जायेंगे। यहाँ कौन सी फूंक तात्पर्य है ? इमाम इब्ने कसीर के निकट यह प्रथम फूंक तथा इमाम शौकानी के निकट तीसरी फूंक है जब लोग क़ब्रों से उठेंगे।

[2]यह छूट प्राप्त लोग कौन होंगे ? कुछ के निकट नबी तथा शहीद, कुछ के निकट फ़रिश्ते तथा कुछ के निकट सभी ईमानवाले हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि सम्भवत: सभी वर्णित लोग इसमें सम्मिलित हों क्योंकि ईमानवाले वास्तविक घबराहट से सुरक्षित होंगे। (जैसाकि आ रहा है)

[3]यह क़ियामत वाले दिन होगा कि पर्वत अपने स्थान पर नहीं रहेंगे बल्कि बादलों की तरह चलेंगे तथा उड़ेंगे।

[4]अर्थात यह अल्लाह के महान सामर्थ्य से होगा जिसने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया है। परन्तु वह इन सुदृढ़ वस्तुओं को भी रूई की भाँति कर देने का सामर्थ्य रखता है।

[5]अर्थात वास्तविक तथा बड़ी घबराहट से वे सुरक्षित होंगे। ﴿لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ﴾ (सूर: अल-अंबिया-१०३)

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِى النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा जो बुराई लेकर आयेंगे वे औंधे मुख आग में झोंक दिये जायेंगे। केवल वही बदला दिये जाओगे जो तुम करते रहे।

إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِى حَرَّمَهَا وَلَهُۥ كُلُّ شَىْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾

(९१) मुझे तो केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर के प्रभु की इबादत करता रहूँ जिसने इसे आदर (पवित्रता) वाला बनाया है।[1] जिसका स्वामित्व प्रत्येक वस्तु है तथा मुझे यह भी आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में हो जाऊँ।

وَأَنْ أَتْلُوَا الْقُرْءَانَ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ وَمَن ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा मैं क़ुरआन का पाठ करता रहूँ, तो जो संमार्ग पर आ जाये वह अपने लाभ के लिए संमार्ग पर आयेगा, तथा जो भटक जाये तो कह दीजिए कि मैं तो केवल सतर्क करने वालों में से हूँ।[2]

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ ءَايَٰتِهِۦ فَتَعْرِفُونَهَا وَمَا رَبُّكَ بِغَٰفِلٍ

(९३) तथा कह दीजिए कि सारी प्रशंसायें अल्लाह ही के लिए हैं।[3] वह तुम्हें निकट भविष्य में ही अपनी निशानियाँ दिखायेगा

---

[1]इससे तात्पर्य मक्का नगर है। इसका विशेष रूप से वर्णन इसलिए किया गया है कि इसमें ख़ानये काबा है तथा यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी अत्यधिक प्रिय था। "पवित्रता वाला" का अर्थ है कि इसमें रक्तपात करना, अत्याचार करना, शिकार करना, वृक्ष काटना, यहाँ तक कि काँटा तोड़ना भी निषेध है। (बुख़ारी किताबुल जनायेज़, मुस्लिम किताबुल हज बाबु तहरीमे मक्का व सैदहा, व अलसुनन)

[2]अर्थात मेरा कार्य केवल सतर्क कर देना है। मेरे सतर्क करने से जो मुसलमान हो जायेगा उसमें उसी का लाभ है कि अल्लाह की यातना से बच जायेगा, तथा जो मेरे आमन्त्रण को नहीं स्वीकार करेगा तो मेरा क्या ? अल्लाह तआला स्वयं ही उससे हिसाब ले लेगा तथा नरक की यातना का स्वाद चखा देगा।

[3]कि जो किसी को उस समय तक यातना नहीं देता जब तक प्रमाण (तर्क) स्थापित न कर देता।

عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

जिन्हें तुम स्वयं पहचान लोगे ।[1] तथा जो कुछ तुम कर रहे हो उस से आपका प्रभु अचेत नहीं ।[2]

سُورَةُ الْقَصَصِ

सूरतुल क़सस-२८

सूरः क़सस मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें अट्ठासी आयतें तथा नौ रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

طسم ﴿١﴾

(१) ता॰सीन॰मीम॰

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾

(२) ये आयतें हैं दिव्य प्रकाश वाली किताब की ।

نَتْلُوا عَلَيْكَ مِن نَّبَإِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣﴾

(३) हम आपके समक्ष मूसा तथा फ़िरऔन की सत्य घटना वर्णन करते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं ।[3]

---

[1]अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ﴾

"हम उन्हें बाहर जगत तथा उनके अन्दर अपनी निशानियाँ दिखायेंगे ताकि उन पर सत्य प्रकट हो जाये ।" (*सूरः हा॰मीम॰सजदा-५३*)

यदि जीवन में यह निशानियाँ देखकर ईमान नहीं लाते तो मृत्यु के समय तो इन निशानियों को देखकर अवश्य पहचान लेते हैं । परन्तु उस समय की पहचान कोई लाभ नहीं पहुँचाती, इसलिए कि उस समय का ईमान स्वीकार्य नहीं ।

[2]बल्कि प्रत्येक वस्तु को वह देख रहा है । इसमें काफ़िरों के लिए अत्यधिक चेतावनी तथा बड़ी धमकी है ।

सूरः अल-क़सस की व्याख्या :

[3]यह घटना इस बात का प्रमाण है कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं क्योंकि अल्लाह की प्रकाशना के बिना शताब्दियों पूर्व की घटनाओं को ठीक उसी प्रकार से वर्णन कर देना जिस प्रकार घटित हुई, असम्भव है । फिर भी उसके उपरान्त इससे लाभ केवल ईमानवालों ही को होगा, क्योंकि वही आपकी बातों को मानेंगे ।

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضْعِفُ طَائِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٤﴾

(४) निःसंदेह फ़िरऔन ने धरती पर उपद्रव मचा रखा था,[1] तथा वहाँ के लोगों को गुट बना रखा था,[2] उनके एक गुट को हीन (दुर्बल) बना रखा था,[3] उनके बालकों को तो मार डालता था[4] तथा बालिकाओं को जीवित छोड़ देता था। निःसंदेह वह था ही उपद्रवियों में से।

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ﴿٥﴾

(५) तथा फिर हमने चाहा कि उन पर दया करें जिन्हें धरती पर अत्यन्त हीन (दुर्बल) कर दिया गया था तथा हम उन्हें ही प्रमुख एवं (धरती) का उत्तराधिकारी बनायें।[5]

---

[1]अर्थात अत्याचार तथा क्रूरता का बाजार गर्म कर रखा था तथा अपने को महादेव कहलाता था।

[2]जिनके ऊपर भिन्न-भिन्न कार्य तथा सेवायें थीं।

[3]इससे तात्पर्य इस्राईल की सन्तान है जो उस समय की सर्वोत्तम समुदाय थी, परन्तु परीक्षा के रूप में फ़िरऔन की दासता तथा उसके अत्याचार एवं क्रूरता का लक्ष्य बनी हुई थी।

[4]जिसका कारण कुछ ज्योतिष शास्त्रियों की भविष्यवाणी थी कि इस्राईल के वंश में जन्म लेने वाले एक बालक के हाथों फ़िरऔन का विनाश होगा तथा उसके राज्य का पतन होगा, जिसका समाधान उसने यह निकाला कि प्रत्येक जन्म लेने वाले इस्राईली शिशु को मौत के घाट उतार दिया जाय। परन्तु उस मूर्ख ने यह नहीं सोचा कि यदि ज्योतिष शास्त्री सत्य कहते हैं तो ऐसा अवश्य होकर रहेगा चाहे वह अबोध शिशुओं की निर्मम हत्या करता रहे तथा यदि वे झूठे हैं तो हत्या करवाने की आवश्यकता नहीं थी। (फ़तहुल क़दीर) कुछ लोगों का कहना है कि आदरणीय इब्राहीम से यह शुभ सूचना चली आ रही थी कि उनके वंश में एक बालक होगा, जिसके हाथों मिस्र राज्य का पतन होगा। किब्तियों ने यह शुभ सूचना इस्राईल की सन्तान से सुनी तथा फ़िरऔन को इससे अवगत करा दिया, जिस पर उसने इस्राईल की सन्तान के शिशुओं की निर्मम हत्या करानी प्रारम्भ कर दी। (इब्ने कसीर)

[5]अतः ऐसा ही हुआ तथा अल्लाह तआला ने इस पतित तथा दास समुदाय को पूर्व-पश्चिम का उत्तराधिकारी (स्वामी तथा राज्याधिकारी) बना दिया। (सूरः *अल-आराफ़-१३७*) इसके अतिरिक्त उन्हें धर्म का नेतृत्व करने वाला तथा अगुवा भी बना दिया।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم
مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝٦

(६) तथा यह भी कि उन्हें धरती पर शक्ति एवं अधिकार प्रदान करें[1] तथा फ़िरऔन एवं हामान तथा उनकी सेनाओं को वह दिखायें जिससे वे डर रहे हैं।[2]

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ
فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ
وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ
إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ
مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٧

(७) तथा हमने मूसा की माता को प्रकाशना (वह्यी) की[3] कि उसे दूध पिलाती रह तथा जब तुझे उसके सम्बन्ध में कोई भय प्रतीत हो तो उसे नदी में बहा देना तथा कोई भय, शोक एवं दुख न करना।[4] हम निःसंदेह उसे तेरी ओर लौटाने वाले हैं[5] तथा उसे अपने पैग़म्बरों में से बनाने वाले हैं।

---

[1]यहाँ धरती से तात्पर्य सीरिया की धरती है, जहाँ वे कनआनियों की धरती के उत्तराधिकारी बने क्योंकि मिस्र से निकलने के पश्चात इस्राईल की सन्तान मिस्र वापस नहीं गयी। والله أعلم

[2]अर्थात उन्हें जो भय था कि एक इस्राईली के हाथों फ़िरऔन तथा उसके देश एवं सेना का पतन होगा उनके इस भय को हमने वास्तविक रूप में दिखा दिया।

[3]प्रकाशना से तात्पर्य यहाँ हृदय में बात डालना है, वह प्रकाशना नहीं है जो नबियों पर फ़रिश्ते के द्वारा अवतरित की जाती थी, तथा यदि फ़रिश्ते के द्वारा भी आयी हो तब भी मूसा की माता का नबी होना सिद्ध नहीं होता, क्योंकि फ़रिश्ते कई बार जनसामान्य के पास भी आते हैं। जैसे हदीस में गंजे, कोढ़ी तथा अंधे के पास फ़रिश्तों का आना सिद्ध है। (सर्वसम्मत हदीस सहीह बुख़ारी किताबु अहादीसिल अंबिया)

[4]अर्थात नदी में डूब जाने अथवा मर जाने से न भयभीत होना तथा उसके बिछड़ने का दुख न करना।

[5]अर्थात ऐसी विधि से कि जिससे उसका छुटकारा निश्चित हो। कहते हैं कि जब शिशु वध का यह क्रम अधिक हुआ तो फ़िरऔन के समुदाय को भय हुआ कि कहीं इस्राईल का वंश न समाप्त हो जाये तथा फिर मेहनत वाले कार्य हमें न करने पड़े। इस भय का उन्होंने फ़िरऔन से वर्णन किया, जिस पर नया आदेश जारी कर दिया गया कि एक वर्ष बच्चे वध किये जायें तथा एक वर्ष न किये जायें। आदरणीय हारून उस वर्ष पैदा हुए जिस वर्ष बच्चों का वध नहीं होता था, जबकि मूसा वध किये जाने वाले वर्ष में पैदा हुए।

فَالْتَقَطَهُۥٓ ءَالُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا۟ خَٰطِـِٔينَ ⑧

(८) अन्त में फ़िरऔन के कर्मचारियों ने उस बालक को उठा लिया[1] कि अन्ततः यही बालक उनका शत्रु हुआ तथा उनके दुखों का कारण बना, [2] कोई सन्देह नहीं कि फ़िरऔन तथा हामान एवं उनकी सेना थे ही अपराधी ।[3]

وَقَالَتِ ٱمْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّى وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰٓ أَن يَنفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهُۥ وَلَدًا

(९) तथा फ़िरऔन की पत्नी ने कहा कि यह तो मेरी तथा तेरी आँखों की ठंडक है, इसकी हत्या न करो, [4] अधिक सम्भव है कि यह हमें कोई लाभ पहुँचाये अथवा हम इसे अपना ही

परन्तु अल्लाह तआला ने उनकी सुरक्षा के साधन का प्रबन्ध इस प्रकार किया कि प्रथम तो उनकी माता के गर्भ को इस प्रकार प्रकट नहीं किया जिस प्रकार सामान्य गर्भवती का होता है कि जिससे फ़िरऔन की छोड़ी हुई दाईयों की दृष्टि में आ सके। इस प्रकार जन्म की समस्या तो सरलता से हल हो गई तथा यह घटना सरकार के परिवार नियोजन अधिकारियों के ज्ञान में नहीं आई। परन्तु जन्म के पश्चात वध का भय शेष था, जिसका हल स्वयं अल्लाह तआला ने हृदय में डाली गई बात द्वारा मूसा की माता को समझा दिया, अतः उन्होंने उसे एक संदूक में लिटाकर नील नदी में डाल दिया। (इब्ने कसीर)

[1]यह सन्दूक बहता-बहता फ़िरऔन के राजभवन तक पहुँच गया, जो नदी के तट ही पर था तथा वहाँ फ़िरऔन के कर्मचारियों ने पकड़ कर बाहर निकाला।

[2]यह لام परिणामवाची है अर्थात उन्होंने तो उसे अपना बच्चा तथा आँखों की ठंडक बनाकर रख लिया था न कि शत्रु समझकर। परन्तु परिणाम उनके इस कर्म का यह हुआ कि वह उनका शत्रु तथा शोक एवं दुख का कारण सिद्ध हुआ।

[3]यह पूर्वोक्त का कारण है कि मूसा उनके लिए शत्रु क्यों सिद्ध हुए ? इसलिए कि वे सभी अल्लाह के अवज्ञाकारी तथा पापी थे। अल्लाह ने दण्ड स्वरूप उसके पालन-पोषण किये को ही उनके विनाश का साधन बना दिया।

[4]यह उस समय कहा जब उन्होंने सन्दूक में सुन्दर आकर्षक शिशु देखा। कुछ कहते हैं कि यह उस समय का कथन है जब मूसा ने फ़िरऔन की दाढ़ी के बाल नोच लिये थे तो फ़िरऔन ने उनको वध करने का आदेश दे दिया था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) बहुवचन का शब्द या तो अकेले फ़िरऔन के लिए सम्मान स्वरूप कहा गया है अथवा सम्भव है कि वहाँ उसके कुछ दरबारी उपस्थित रहे हों।

وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

पुत्र बना लें[1] तथा यह लोग बुद्धि ही नहीं रखते थे ।[2]

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰي قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠

(१०) तथा मूसा (अलैहिस्सलाम) की माता का हृदय व्याकुल हो गया,[3] निकट था कि इस (वास्तविकता) को बिल्कुल स्पष्ट कर देतीं यदि हम उनके हृदय को ढारस न देते, यह इस लिए कि वह विश्वास करने वालों में रहे ।[4]

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١

(११) मूसा (अलैहिस्सलाम) की माता ने उसकी बहन[5] से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा, तो वह उसे दूर ही दूर से देखती रही[6] तथा फ़िरऔनियों को इसका आभास भी न हुआ ।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

(१२) तथा उसके पहुँचने से पूर्व हमने मूसा पर दाईयों का दूध निषेध (हराम) कर दिया था,[7] यह

---

[1]क्योंकि फ़िरऔन को संतान नहीं थी ।

[2]कि यह बालक, जिसे वे अपना बालक बना रहे हैं, यह तो वही बालक है जिसे मारने के लिए सैकड़ों बालकों को मौत की नींद सुला दिया गया है ।

[3]अर्थात उनका दिल प्रत्येक वस्तु एवं चिन्ता से शून्य हो गया तथा एक ही चिन्ता अर्थात मूसा अलैहिस्सलाम का दुख दिल में समा गया, जिसे हिन्दी में व्याकुलता कहा जाता है ।

[4]अर्थात अत्यधिक दुख के कारण यह प्रकट कर देतीं कि यह उनका पुत्र है परन्तु अल्लाह ने उनके हृदय को दृढ़ कर दिया, जिस पर उन्होंने धैर्य रखा तथा विश्वास कर लिया कि अल्लाह ने इस मूसा को सकुशल वापस लौटाने का जो वचन दिया है, वह पूर्ण होगा ।

[5]मूसा की बहन का नाम मरियम बिन्ते इमरान था जिस प्रकार आदरणीय ईसा की माता का नाम मरियम बिन्ते इमरान था । नाम तथा पिता के नाम दोनों में समता थी ।

[6]अत: वह नदी के किनारे-किनारे देखती रही यहाँ तक कि उसने देख लिया कि उसका भाई फ़िरऔन के महल में चला गया है ।

[7]अर्थात हमने अपने सामर्थ्य तथा उत्पत्यादेश द्वारा मूसा को अपनी माता के अतिरिक्त किसी अन्य दाया का दूध पीने से रोक दिया, अत: अत्यन्त प्रयत्न के उपरान्त कोई दाया उन्हें दूध पिलाने तथा शान्त करने में सफल नहीं हो सकी ।

فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰٓ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُۥ لَكُمْ وَهُمْ لَهُۥ نَٰصِحُونَ ﴿١٢﴾

कहने लगी कि क्या मैं तुम्हें[1] ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बालक का पालन-पोषण तुम्हारे लिए करें तथा हों भी इस बालक के शुभचिन्तक।

فَرَدَدْنَٰهُ إِلَىٰٓ أُمِّهِۦ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

(१३) तो हमने उसे उसकी माता की ओर वापस पहुँचा दिया[2] ताकि उसकी आँखें ठंडी रहें तथा दुखी न हो तथा जान ले कि अल्लाह का वचन सत्य है[3] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[4]

---

[1]यह सारा दृश्य उनकी बहन शान्तिपूर्वक देख रही थीं अन्त में बोल पड़ीं कि मैं तुम्हें ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का तुम्हारे लिए पालन-पोषण करे।

[2]अत: उन्होंने मूसा की बहन से कहा कि जा उस महिला को ले आ। अत: वह दौड़ी-दौड़ी गयीं तथा अपनी माता को, जो मूसा की भी माता थीं, साथ ले आयीं।

[3]जब आदरणीय मूसा ने अपनी माता का दूध पी लिया तो फ़िरऔन ने मूसा की माता से महल में निवास करने की प्रार्थना की ताकि बालक का उचित पालन-पोषण हो सके। परन्तु उन्होंने कहा कि मैं अपने पति तथा बच्चों को छोड़कर यहाँ नहीं रह सकती। अन्त में यह तय हुआ कि वह अपने साथ बच्चे को अपने घर ले जायें तथा वहीं इसका पालन-पोषण करें तथा इसका पारिश्रामिक उन्हें राज्य कोष से दिया जायेगा। अल्लाह की ही सारी प्रशंसायें हैं ! अल्लाह के सामर्थ्य का क्या कहना, दूध अपने पुत्र को पिलायें तथा वेतन फ़िरऔन से प्राप्त करें। प्रभु ने मूसा को वापस लौटाने का वचन किस सुन्दर विधि से पूर्ण कर दिखाया। ﴿فَسُبْحَٰنَ ٱلَّذِى بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ﴾ एक वर्णन में हैं, "उस कारीगर की तुलना, जो अपनी बनायी हुई वस्तुओं में पुण्य तथा शुभ का विचार भी रखता है मूसा की माता के समान है, जो अपने ही पुत्र को दूध पिलाती हैं तथा उसका मूल्य भी प्राप्त करती हैं।" (अबू दाऊद)

[4]अर्थात बहुत से कार्य ऐसे होते हैं जिनके परिणाम की वास्तविकता से अधिकतर लोग अनभिज्ञ होते हैं परन्तु अल्लाह को उसके अच्छे परिणाम का ज्ञान होता है। इसीलिए अल्लाह ने फ़रमाया (हो सकता है जिस वस्तु को तुम बुरा समझो उसमें तुम्हारे लिए भलाई हो तथा जिसको तुम प्रिय समझो उसमें तुम्हारे लिए बुराई का पक्ष हो) (सूर: *अल-बक़र:-२१६*) अन्य स्थान पर फ़रमाया (हो सकता है तुम किसी वस्तु को बुरा समझो, तथा अल्लाह उसमें तुम्हारे लिए अत्यधिक भलाई उत्पन्न कर दे) (सूर: *अल-निसा-१९*)

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُۥ وَٱسْتَوَىٰٓ ءَاتَيْنَٰهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी युवावस्था को पहुँच गये तथा पूरे सबल हो गये, हमने उन्हें हिक्मत (बुद्धि) तथा ज्ञान प्रदान किया,[1] पुण्य करने वालों को हम इसी प्रकार का बदला दिया करते हैं।

وَدَخَلَ ٱلْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِن شِيعَتِهِۦ وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِۦ ۖ فَٱسْتَغَٰثَهُ ٱلَّذِى مِن شِيعَتِهِۦ عَلَى ٱلَّذِى مِنْ عَدُوِّهِۦ فَوَكَزَهُۥ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۖ إِنَّهُۥ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

(१५) तथा (मूसा) एक ऐसे समय में नगर में आये जबकि नगर के लोग निंद्रा में थे।[2] यहाँ दो व्यक्तियों को लड़ते हुए पाया, यह एक तो उसके गुटों में से था तथा यह दूसरा उसके शत्रुओं में से,[3] उसके सम्प्रदाय वाले ने उसके विरुद्ध जो उसके शत्रुओं में से था, उससे सहायता माँगी, जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा जिससे वह मर गया, मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी कार्य है।[4] नि:संदेह शैतान शत्रु तथा खुले रूप से बहकाने वाला है।[5]

इसलिए मनुष्य की भलाई इसी में है कि वह अपने प्रिय तथा अप्रिय को अलग करते हुए प्रत्येक मामले में अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करे कि इसी में उसके लिए भलाई तथा शुभ परिणाम है।

[1]हिक्मत तथा ज्ञान से तात्पर्य यदि नबूअत है तो उस स्थान तक किस प्रकार पहुँचे, इसका विवरण अगली आयत में है। कुछ व्याख्याकारों के निकट इससे तात्पर्य नुबूवत नहीं बल्कि समझ-बूझ तथा वह ज्ञान है जो उन्होंने पारिवारिक वातावरण में रह कर सीखा।

[2]इससे कुछ ने मग़रिब (संध्याकाल) तथा ईशा (रात्रि) के मध्य का समय तथा कुछ ने मध्यान्ह तात्पर्य लिया है जब लोग विश्राम कर रहे होते हैं।

[3]अर्थात फ़िरऔन के सम्प्रदाय क़िब्त में से था।

[4]इसे शैतानी (दानव का) कर्म इसलिए कहा गया है कि हत्या एक महा अपराध है, तथा आदरणीय मूसा का उद्देश्य कदापि हत्या करने का नहीं था।

[5]जिसकी मानव से शत्रुता भी प्रकट होती है तथा मनुष्य को भटकाने के लिए जो-जो प्रयत्न करता है, वह गुप्त नहीं है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

(१६) फिर वह प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु ! मैंने तो स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया, तू मुझे क्षमा कर दे ।[1] अल्लाह (तआला) ने उसे क्षमा कर दिया, नि:सन्देह वह क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त दयालु है ।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾

(१७) कहने लगे हे मेरे प्रभु ! जैसे तूने मुझ पर यह दया की मैं भी अब किसी पापी का सहयोगी न बनूँगा ।[2]

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُبِينٌ ﴿١٨﴾

(१८) फिर सुबह ही सुबह डरते हुए[3] समाचार लेने को नगर में गये कि सहसा वही व्यक्ति जिसने कल उनसे सहायता माँगी थी, उनसे विनती कर रहा है । मूसा ने उससे कहा कि इस में संदेह नहीं कि तू तो स्पष्ट रूप से पथभ्रष्ट है ।[4]

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي

(१९) फिर जब अपने तथा उस के शत्रु को पकड़ना चाहा[5] वह प्रार्थी कहने

---

[1]यह अकस्मात हत्या यद्यपि महापाप नहीं थी, क्योंकि महापाप से अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को सुरक्षित रखता है । फिर भी यह ऐसा पाप प्रत्येक रूप से था जिसके लिये अत्यधिक क्षमा-याचना उन्होंने आवश्यक समझा । दूसरे उन्हें भय था कि यदि फ़िरऔन को इसकी सूचना मिली तो इसके बदले उनका वध न कर दे ।

[2]अर्थात जो काफ़िर तथा तेरे आदेशों का विरोधी होगा, तूने मुझ पर जो उपकार किया है, उसके कारण मैं उसकी सहायता नहीं करूँगा । कुछ ने इस उपकार से तात्पर्य उस पाप की क्षमा को लिया है जो अनैच्छिक रूप से क़िब्ती की हत्या के रूप में उनसे हो गया था ।

[3] خَائِفًا का अर्थ डरते हुए يَتَرَقَّبُ इधर-उधर झांकते तथा अपने विषय में भयभीत ।

[4]अर्थात आदरणीय मूसा ने डांटा कि तू कल भी लड़ता हुआ पाया गया था तथा आज पुन: दूसरे से लड़ रहा है, तू तो स्पष्ट रूप से मार्ग पर नहीं अर्थात झगड़ालू है ।

[5]अर्थात आदरणीय मूसा ने चाहा कि क़िब्ती को पकड़ लें, क्योंकि वही आदरणीय मूसा तथा इस्राईल की सन्तान का शत्रु था, ताकि लड़ाई आगे न बढ़े ।

هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

लगा[1] कि हे मूसा ! क्या जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति की हत्या कर दी है मुझे भी मार डालना चाहता है, तू तो देश में अत्याचारी एवं उपद्रवी बनना ही चाहता है तथा तेरा यह विचार ही नहीं कि संधि करने वालों में से हो।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) और नगर के दूर के किनारे से दौड़ता हुआ एक व्यक्ति आया[2] तथा कहने लगा कि हे मूसा ! यहाँ के मुखिया तेरी हत्या का परामर्श कर रहे हैं, अतः तू (अति शीघ्र) चला जा, मुझे अपना शुभचिन्तक मान।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾

(२१) अतः मूसा वहाँ से भयभीत होकर बचते-बचाते निकल भागे,[3] कहने लगे हे प्रभु ! मुझे अत्याचारियों के गुट से बचा ले।[4]

---

[1]वादी (इस्राईली) ने समझा कि मूसा शायद उसे पकड़ने लगे हैं, तो वह बोल उठा कि हे मूसा ! أَتُرِيدُ أَن تَقْتُلَنِي क्या तू मुझे मारना चाहता है ? जिससे क़िब्त को ज्ञात हो गया कि कल जो हत्या हुई थी उसका हत्यारा मूसा है। उसने जाकर फ़िरऔन को सूचित कर दिया, जिस पर फ़िरऔन ने उसके बदले में मूसा का वध करने का निश्चय कर लिया।

[2]यह आदमी कौन था ? कुछ के निकट यह फ़िरऔन के वंश से था, जो गुप्त रूप से आदरणीय मूसा का शुभचिन्तक था। तथा स्पष्ट बात है कि सरदारों के विचारों की सूचना ऐसे ही आदमी से आना अधिक अनुमानित बात है। कुछ के निकट यह आदरणीय मूसा का सम्बन्धी तथा इस्राईली था। दूर के किनारे से तात्पर्य मुन्फ़ है जहाँ फ़िरऔन का भवन तथा राजधानी थी तथा यह नगर के अन्तिम सिरे पर था।

[3]जब आदरणीय मूसा को यह ज्ञात हुआ तो वह वहाँ से निकल खड़े हुए ताकि फ़िरऔन की पकड़ में न आ सकें।

[4]अर्थात फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों से, जिन्होंने आपसी विचार-विमर्श से आदरणीय मूसा की हत्या का परामर्श दिया था। कहते हैं कि आदरणीय मूसा को कोई ज्ञान न था कि कहाँ जाना है ? क्योंकि मिस्र छोड़ने की यह दुर्घटना आकस्मिक हुई थी। पहले से

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّيٓ أَن يَهْدِيَنِي سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जब 'मदयन' की ओर जाने लगे तो कहने लगे कि मुझे विश्वास है कि मेरा प्रभु मुझे सीधा मार्ग ले चलेगा ।[1]

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ ٱلنَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِن دُونِهِمُ ٱمْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِى حَتَّىٰ يُصْدِرَ ٱلرِّعَآءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾

(२३) 'मदयन' के पानी पर जब आप पहुँचे तो देखा कि लोगों का एक समूह वहाँ पानी पिला रहा है[2] तथा दो महिलायें अलग खड़ी (अपने पशुओं को) रोकती हुई दिखाई दीं, पूछा कि तुम्हारी क्या समस्या है ,[3] वे बोलीं कि जब तक ये चरवाहे वापस न लौट जायें हम पानी नहीं पिलाते[4] तथा हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं ।[5]

فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰٓ إِلَى ٱلظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّى لِمَآ أَنزَلْتَ إِلَىَّ

(२४) अत: आपने स्वयं उन (पशुओं) को पानी पिला दिया फिर छाया की ओर हट आये

कोई विचार अथवा योजना नहीं थी, अत: अल्लाह ने घोड़े पर एक फ़रिश्ता भेज दिया, जिसने उन्हें मार्ग बताया । والله أعلم (इब्ने कसीर)

[1]अत: अल्लाह ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार की तथा ऐसे सीधे मार्ग की ओर उनका मार्गदर्शन किया जिससे उनकी दुनिया भी सुधर गयी तथा आख़िरत भी अर्थात वह मार्गदर्शक भी बन गये तथा मार्ग पाने वाले भी, स्वयं भी मार्गदर्शित तथा अन्यों को मार्ग बताने वाले ।

[2]अर्थात जब मदयन पहुँचे तो देखा कि उसके घाट (कुएँ) पर लोगों की भीड़ है, जो अपने पशुओं को पानी पिला रहे हैं । मदयन यह क़बीले (प्रजाति) का नाम था तथा आदरणीय इब्राहीम की सन्तान में से था, जब कि आदरणीय मूसा याक़ूब के वंश से थे जो आदरणीय इब्राहीम के पौत्र (आदरणीय इसहाक़ के पुत्र) थे । इस प्रकार मदयनवासियों तथा मूसा के मध्य वंशीय सम्बन्ध भी था । (ऐसरूत्तफ़ासीर) तथा यही आदरणीय शुऐब का निवास स्थान एवं नबूअत (दूतत्व) का क्षेत्र भी था ।

[3]दो स्त्रियों को अपने पशुओं को रोके खड़ी देखकर आदरणीय मूसा के हृदय में दया आ गयी तथा उनसे पूछा कि क्या बात है तुम अपने पशुओं को पानी नहीं पिलातीं ?

[4]ताकि पुरूषों से हमारा मिश्रण न हो । رِعَاءٌ शब्द رَاعٍ (चरवाहे) का बहुवचन है ।

[5]इसलिए वे स्वयं घाट पर पानी पिलाने के लिए नहीं आ सकते ।

مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

तथा कहने लगे हे प्रभु ! तू जो कुछ भलाई मेरी ओर उतारे मैं उसका आकांक्षी हूँ ।[1]

فَجَآءَتْهُ إِحْدَىٰهُمَا تَمْشِى عَلَى ٱسْتِحْيَآءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِى يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُۥ وَقَصَّ عَلَيْهِ ٱلْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) इतने में उन दोनों महिलाओं में से एक उनकी ओर लज्जा के साथ चलती हुई आयी[2] तथा कहने लगी कि मेरे पिता आपको बुला रहे हैं ताकि आप ने जो हमारे (पशुओं) को पानी पिलाया है उसका पारिश्रमिक दें,[3] जब (आदरणीय मूसा) उनके पास पहुँचे तथा उनसे अपनी सारी कथा सुनाई तो वह कहने लगे

---

[1]आदरणीय मूसा इतनी लम्बी यात्रा करके मिस्र से मदयन पहुँचे थे, खाने के लिए कुछ नही था जबकि यात्रा की थकान तथा भूख से निढाल थे। अत: पशुओं को पानी पिलाकर एक वृक्ष की छाया में आकार प्रार्थना करने लगे। خير कई बातों के लिए प्रयोग किया जाता है, खाने के लिये, अच्छे कार्यों के लिये, इबादत के लिये, शक्ति, बल तथा धन के लिये। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यहाँ इसका प्रयोग खाने के लिये हुआ है। अर्थात मुझे इस समय भोजन की आवश्यकता है।

[2]अल्लाह ने आदरणीय मूसा की प्रार्थना स्वीकार की तथा दोनों में से एक लड़की उन्हें बुलाने आ गयी। लड़की की लज्जा का क़ुरआन में विशेष रूप से वर्णन है कि यह स्त्री का मूल आभूषण है। पुरूषों की भाँति लज्जा तथा पर्दे से निश्चिन्तता तथा निर्लज्जता स्त्री के लिए धार्मिक नियमों के अनुसार प्रिय नहीं है।

[3]लड़कियों का पिता कौन था ? क़ुरआन करीम ने स्पष्टरूप से नाम नहीं लिया है। व्याख्याकारों के बहुमत ने इससे तात्पर्य आदरणीय शुऐब अलैहिस्सलाम को लिया है जो मदयन वासियों के लिए नबी (ईशदूत) भेजे गये थे। इमाम शौकानी ने भी इसी कथन को मान्यता दिया है। परन्तु इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आदरणीय शुऐब के नबूवत का समय आदरणीय मूसा से बहुत पूर्व का है। इसलिए यहाँ आदरणीय शुऐब का कोई सम्बन्धी अथवा शुऐब के समुदाय का व्यक्ति तात्पर्य है والله أعلم। अत: आदरणीय मूसा ने लड़कियों के साथ जो दया भाव तथा उपकार किया था वह लड़कियों ने वृद्ध पिता से कहा, जिससे पिता के हृदय में भी वह भावना उत्पन्न हुई कि उपकार का बदला उपकार के साथ दिया जाये अथवा उसके परिश्रम का पारिश्रमिक ही अदा कर दिया जाये।

कि अब न डर, तूने अत्याचारी समुदाय से छुटकारा पा लिया ।[1]

قَالَتْ إِحْدَىٰهُمَا يَٰٓأَبَتِ ٱسْتَـْٔجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ ٱسْتَـْٔجَرْتَ ٱلْقَوِىُّ ٱلْأَمِينُ ﴿٢٦﴾

(२६) उन दोनों में से एक ने कहा कि हे पिताजी ! आप इन्हें मज़दूरी पर रख लीजिए क्योंकि जिन्हें आप पारिश्रमिक पर रखें उनमें से सबसे उत्तम वह है जो बलवान एवं ईमानदार हो ।[2]

قَالَ إِنِّىٓ أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ٱبْنَتَىَّ هَٰتَيْنِ عَلَىٰٓ أَن تَأْجُرَنِى ثَمَٰنِىَ

(२७) उस (बूढ़े) ने कहा कि मैं अपनी इन दो पुत्रियों में से एक को आपके विवाह में देना चाहता हूँ [3] इस [महर (स्त्रीधन)] पर कि आप

---

[1]अर्थात अपने मिस्र की घटना तथा फ़िरऔन के अत्याचार एवं क्रूरता की कथा सविस्तार सुनायी, जिस पर उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र फ़िरऔन की राज्य सीमा से बाहर है । इस लिए भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है । अल्लाह ने अत्याचारियों से मुक्ति प्रदान कर दी है ।

[2]कुछ व्याख्याकारों ने लिखा है कि पिता ने पुत्रियों से पूछा कि तुम्हें किस प्रकार ज्ञात है कि यह शक्तिशाली भी है तथा ईमानदार भी । जिस पर पुत्रियों ने बताया कि जिस कुऐं से पानी पिलाया उस पर इतना भारी पत्थर रखा हुआ था कि उसे उठाने के लिए दस मनुष्यों की आवश्यकता होती है, परन्तु हमने देखा कि उस व्यक्ति ने अकेले ही उठा लिया तथा बाद में रख दिया । उसी प्रकार जब मैं उसे बुलाकर अपने साथ ला रही थी, तो चूँकि मार्ग का ज्ञान मुझे ही था, मैं आगे-आगे चल रही थी तथा यह पीछे-पीछे, परन्तु हवा के कारण मेरी चादर उड़ जाती थी तो इस व्यक्ति ने कहा कि तू पीछे चल मैं आगे-आगे चलता हूँ ताकि मेरी दृष्टि तेरे शरीर के किसी अंग पर न पड़े । मार्ग के संकेत के लिए पीछे से पत्थर, कंकरी आदि मार दिया कर । والله أعلم بحال صحته (इब्ने कसीर)

[3]हमारे देश में किसी लड़की वाले की ओर से विवाह की इच्छा व्यक्त करना अप्रिय समझा जाता है । परन्तु अल्लाह के धार्मिक नियमों में यह घृणित कार्य नहीं है । अच्छे गुणों से सुशोभित लड़का यदि मिल जाये तो उससे अथवा उसके घर वालों से अपनी पुत्री के विवाह की बात करना अनुचित नहीं है, अपितु अच्छा तथा प्रिय कार्य है । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा कराम (رضوان الله عليهم أجمعين) के काल में भी यही नियम था ।

حِجَجٍۚ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَۖ وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَۚ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾

आठ वर्ष तक मेरा काम-काज करें ।[1] हाँ यदि आप दस वर्ष तक करें तो यह आपकी ओर से उपकार स्वरूप है, मैं कदापि यह नहीं चाहता कि आप पर किसी प्रकार का कष्ट डालूँ ।[2] अल्लाह को स्वीकार हुआ तो आगे चलकर आप मुझे भला व्यक्ति पायेंगे ।[3]

قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَۖ أَيَّمَا ٱلْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَٰنَ عَلَيَّۖ وَٱللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

(२८) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ठीक है यह बात तो मेरे तथा आपके मध्य निर्धारित हो गयी, मैं इन दोनों अवधियों में से जिसे पूरा कर लूँ मुझ पर अत्याचार न हो ।[4] हम यह जो कुछ कह रहे हैं उस पर अल्लाह (गवाह एवं) कार्यक्षम है ।[5]

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى ٱلْأَجَلَ وَسَارَ

(२९) जब (आदरणीय) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अवधि पूर्ण कर ली[6] तथा अपने परिवार

---

[1]इसे धर्मगुरूओं ने पारिश्रमिक (मज़दूरी पर काम कराने) के औचित्य का प्रमाण बनाया है अर्थात किराया तथा पारिश्रमिक पर पुरूष सेवा प्राप्त करना उचित है ।

[2]अर्थात दो अतिरिक्त वर्ष की सेवा में कठिनाई तथा कष्ट हो तो आठ वर्ष के बाद जाने की आज्ञा होगी ।

[3]न झगड़ा करूँगा,न दुख दूँगा, न कड़ाई से काम लूँगा ।

[4]अर्थात आठ वर्ष के पश्चात अथवा दस वर्ष के पश्चात जाना चाहूँ तो मुझ से अधिक रहने की माँग न की जाये ।

[5]यह कुछ के निकट शुऐब अथवा शुऐब अलैहिस्सलाम के भतीजे का कथन है तथा कुछ के निकट आदरणीय मूसा का । सम्भव है दोनों की ओर से हो, क्योंकि बहुवचन प्रयोग हुआ है अर्थात दोनों ने इस बात में अल्लाह को साक्षी ठहराया । तथा उसके साथ ही उनकी पुत्री तथा आदरणीय मूसा में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गया । शेष विवरण का अल्लाह तआला ने वर्णन नहीं किया है । वैसे इस्लाम धर्म में दोनों पक्षों की सहमति के साथ विवाह सम्बन्ध के लिए दो साक्षी भी आवश्यक हैं ।

[6]आदरणीय इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने इस अवधि से दस वर्ष की अवधि तात्पर्य लिया है, क्योंकि यही पूर्ण तथा शुद्ध (अर्थात मूसा के ससुर के लिए प्रिय एवं इच्छित) थी तथा

بِأَهْلِهِۦٓ ءَانَسَ مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ ٱمْكُثُوٓا۟ إِنِّىٓ ءَانَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىٓ ءَاتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ ٱلنَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

वालों को लेकर चले[1] तो 'तूर' नामक पर्वत की ओर अग्नि देखी, अपनी पत्नी से कहने लगे, ठहरो ! मैंने अग्नि देखी है अधिक सम्भव है कि मैं वहाँ से कोई समाचार लाऊँ अथवा अग्नि का कोई अंगारा लाऊँ ताकि तुम ताप लो ।

فَلَمَّآ أَتَىٰهَا نُودِىَ مِن شَٰطِئِ ٱلْوَادِ ٱلْأَيْمَنِ فِى ٱلْبُقْعَةِ ٱلْمُبَٰرَكَةِ مِنَ ٱلشَّجَرَةِ أَن يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّىٓ أَنَا ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) अत: जब वहाँ पहुँचे तो उस शुभ धरती के मैदान के दायें किनारे के वृक्ष में से आवाज दी गयी[2] कि हे मूसा ! नि:संदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का प्रभु ।[3]

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَٰمُوسَىٰٓ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۖ إِنَّكَ مِنَ ٱلْءَامِنِينَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा यह (भी आवाज आयी) कि अपनी छड़ी डाल दे । फिर जब उसे देखा कि वह सर्प की भाँति फनफना रही है, तो पीठ फेर कर वापस हो लिये तथा मुड़कर मुख भी नहीं किया, हमने कहा कि हे मूसा ! आगे आ भयभीत न हो, नि:संदेह तू हर प्रकार से शान्तिवाला (सुरक्षित) है ।[4]

आदरणीय मूसा के दया भाव के कारण अपने बूढ़े ससुर की हार्दिक इच्छा के विपरीत करना अच्छा नहीं समझा । (फ़तहुल बारी, किताबुल शहादत, बाबु मन उमेर बे इंजाजिल वअदे)

[1]इससे ज्ञात हुआ कि पति अपनी पत्नी को जहाँ चाहे ले जा सकता है ।

[2]अर्थात आवाज़ घाटी के एक छोर से आ रही थी, जो पश्चिम की ओर पर्वत के दाहिनी ओर था। यहाँ वृक्ष से अग्नि के शोले उठ रहे थे जो वास्तव में प्रभु की दिव्य ज्योति का प्रकाश था।

[3]अर्थात हे मूसा ! तुझ से जो इस समय सम्बोधन एवं वार्ता कर रहा है, वह मैं अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार ।

[4]यह मूसा अलैहिस्सलाम का वह चमत्कार है जो तूर पर्वत पर नबूअत से सुशोभित किये जाने के पश्चात उन्हें प्राप्त हुआ। चूँकि चमत्कार व्यवहार के प्रतिकूल मामले को कहा जाता है अर्थात जो सामान्य व्यवहार एवं प्रत्यक्ष साधनों के विपरीत हो। ऐसी बात चूँकि अल्लाह के आदेश तथा इच्छानुसार व्यक्त होती है किसी मनुष्य की शक्ति से नहीं चाहे

(३२) अपने हाथ को अपनी जेब में डाल वह बिना किसी प्रकार के दाग़ के पूर्णत: उज्जवल चमकता हुआ निकलेगा,[1] तथा भय से बचने के लिए अपनी बाँह अपनी ओर मिला ले ।[2] बस ये दोनों चमत्कार तेरे प्रभु की ओर से हैं फ़िरऔन तथा उसके गुट की ओर, वस्तुत: वे सब के सब अवहेलना करने वाले अवज्ञाकारी लोग हैं ।[3]

أُسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوْءٍ وَّاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३३) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) कहा कि प्रभु ! मैंने उनका एक आदमी मार दिया था । अब मुझे संभावना है कि वे मुझे भी मार डालेंगे ।[4]

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

वह महात्मा पैग़म्बर तथा निकटवर्ती नबी ही क्यों न हो । इसलिए जब मूसा के अपने हाथ की लाठी धरती पर फेंकने से चलती, दौड़ती तथा फूँकारती सर्प बन गई तो आदरणीय मूसा भी डर गये । जब अल्लाह ने बताया तथा सांत्वना दी तो आदरणीय मूसा का भय समाप्त हुआ तथा यह स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला ने सत्यता के प्रमाण स्वरूप यह चमत्कार उन्हें प्रदान किया है ।

[1]यह उज्जवल तथा प्रकाशित हाथ दूसरा चमत्कार था जो उन्हें प्रदान किया गया ।

[2]लाठी के विशाल सर्प बन जाने से जो भय आदरणीय मूसा को उत्पन्न होता था, उसका निवारण बता दिया गया कि अपनी भुजा अपनी ओर मिला लिया कर अर्थात अपनी बगल में दवा लिया कर, जिससे भय जाता रहेगा । कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि यह सामान्य है कि जब भी किसी से कोई भय प्रतीत हो तो इस प्रकार करने से भय समाप्त हो जायेगा । इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आदरणीय मूसा के अनुसरण में जो कोई भी घबराहट के समय अपने दिल पर हाथ रखेगा तो उसके हृदय से भय जाता रहेगा अथवा कम से कम हल्का हो जायेगा । إن شاء الله (यदि अल्लाह ने चाहा)

[3]अर्थात फ़िरऔन तथा उसके गुट के समक्ष ये दोनों चमत्कार अपनी सत्यता प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करो । ये लोग अल्लाह की आज्ञाकारिता से निकल चुके हैं तथा अल्लाह के धर्म के विरोधी हैं ।

[4]यह वह भय था जो वास्तव में आदरणीय मूसा के प्राण को था, क्योंकि उनके हाथों एक क़िब्ती की हत्या हो गयी थी ।

وَأَخِي هَٰرُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा मेरा भाई हारून मुझसे अत्यधिक स्वच्छ भाषी है, तू उसे भी मेरा सहायक बनाकर मेरे साथ भेज[1] कि वह मुझे सच्चा माने, मुझे तो भय है कि वे सब मुझे झुठला देंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِآيَاتِنَا أَنتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) (अल्लाह तआला ने) कहा कि हम तेरे भाई द्वारा तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे[2] तथा तुम दोनों को प्रभावशाली करेंगे तो फ़िरऔनी तुम तक पहुँच ही न सकेंगे।[3] हमारी निशानियों के कारण, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही विजयी रहेंगे।[4]

فَلَمَّا جَاءَهُم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى

(३६) अत: जब उनके पास मूसा (अलैहिस्सलाम) हमारे दिये हुए खुले चमत्कार लेकर पहुँचे तो वे कहने लगे कि यह तो केवल गढ़ा-

---

[1]इस्राईली कथाओं के आधार पर आदरणीय मूसा की जीभ में तुतलापन था, जिसका कारण यह वताया गया कि आदरणीय मूसा के समक्ष अग्नि के अंगारे तथा खजूर अथवा मोती रखे गये तो आपने अंगारा उठाकर अपने मुँह में रख लिया था जिससे आपकी जीभ जल गयी थी। यह कारण सही है अथवा नहीं। फिर भी क़ुरआन करीम के शब्दों से यह सिद्ध है कि आदरणीय मूसा की तुलना में आदरणीय हारून स्पष्ट उच्चारण वाले थे तथा आदरणीय मूसा की जीभ में गाँठ थी, जिसके खोलने की प्रार्थना उन्होंने नबूअत से अलंकृत होने के पश्चात की। رِدْءًا (रिद्अ) का अर्थ है सहायक सहयोगी, तथा बल पहुँचाने वाला अर्थात हारून अपने स्पष्ट उच्चारण से मेरी सहायता करके मुझे बल पहुँचायेगें।

[2]अर्थात आदरणीय मूसा की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई तथा उनकी सिफ़ारिश पर आदरणीय हारून को भी नबूअत प्रदान करके उनका साथी तथा सहायक बना दिया गया।

[3]अर्थात हम तुम्हारी रक्षा करेंगे, फ़िरऔन तथा उसके चेले तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेंगे।

[4]यह वही विषय है जो क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णित है, जैसे सूर: *अल-मायदा*-६७, सूर: *अल-अहज़ाब*-३९, सूर: *अल-मुजादिला*-२१, सूर: *अलमोमिन*-५१ तथा ५२)

وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٣٦﴾

गढ़ाया जादू है हमने अपने पूर्वजों के काल में कभी यह नहीं सुना ।[1]

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِندِهِ وَمَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा (आदरणीय) मूसा कहने लगे मेरा प्रभु उसे भलीभाँति जानता है, जो उसके पास का प्रकाश लेकर आता है[2] तथा जिसके लिए आख़िरत का उत्तम परिणाम होता है ।[3] नि:संदेह अन्यायियों का भला न होगा ।[4]

---

[1]अर्थात यह आमन्त्रण कि सृष्टि में केवल एक ही अल्लाह इस योग्य है कि उसकी इबादत की जाये, हमारे लिए बिल्कुल नई है । यह न हमने सुना है तथा न हमारे पूर्वज इस एकेश्वरवाद से परिचित थे । मक्का के मूर्तिपूजकों ने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में कहा था ।

﴿ أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴾

"इसने तो सारे देवताओं को (समाप्त कर) एक ही देवता बना दिया है । यह तो बड़ी विचित्र बात है ।" (सूर: स्वाद-५)

[2]अर्थात मुझसे तथा तुमसे अधिक संमार्ग का जानने वाला अल्लाह है इसलिए जो बात अल्लाह की ओर से आयेगी, वह उचित होगी अथवा तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों की -- ?

[3]उत्तम परिणाम से तात्पर्य आख़िरत में अल्लाह की प्रसन्नता तथा उसकी क्षमा एवं दया के पात्र घोषित हो जाना है, तथा यह सौभाग्य केवल एकेश्वरवादियों के भाग में आयेगा ।

[4]अत्याचारी से तात्पर्य मिश्रणवादी तथा काफ़िर हैं क्योंकि अत्याचार का अर्थ है وَضْعُ الشَّيْءِ فِي غَيْرِ مَحَلِّهِ किसी वस्तु को उसके मूल स्थान से स्थानान्तरित करके किसी अन्य स्थान पर रख देना । मूर्तिपूजक भी चूँकि उपासना के स्थान पर ऐसे व्यक्तियों को बैठा देते हैं जो उसके योग्य नहीं होते । इसी प्रकार काफ़िर भी प्रभु के मूल स्थान से अनभिज्ञ रहते हैं । इसलिए ये लोग अत्यधिक अत्याचारी हैं तथा यह सफलता से अर्थात आख़िरत में अल्लाह की दया तथा क्षमा से वंचित रहेंगे । इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि वास्तविक सफलता आख़िरत की सफलता है । संसार में सुख तथा धन एवं साधन का बाहुल्य वास्तविक सफलता नहीं है इसलिए कि यह अस्थाई सफलता नास्तिक एवं मिश्रणवादी को भी संसार में मिल जाती है । किन्तु अल्लाह महान उनसे सफलता को नकार रहा है जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वास्तविक सफलता आख़िरत (परलोक) ही की सफलता है न कि संसार के कुछ दिनों के लिए अस्थाई सुख-समृद्धि का बाहुल्य ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِى فَأَوْقِدْ لِى يَٰهَٰمَٰنُ عَلَى ٱلطِّينِ فَٱجْعَل لِّى صَرْحًا لَّعَلِّىٓ أَطَّلِعُ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَأَظُنُّهُۥ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा फ़िरऔन कहने लगा कि हे दरबारियो ! मैं तो अपने अतिरिक्त किसी को तुम्हारा देवता नहीं जानता। सुन, हे हामान ! तू मेरे लिए मिट्टी को आग में पकवा[1] फिर मेरे लिए एक महल निर्मित कर तो मैं मूसा के पूज्य (देवता) को झांक लूँ,[2] उसे मैं तो मिथ्यावादियों में से ही समझ रहा हूँ।[3]

وَٱسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُۥ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) उसने तथा उसकी सेना ने अनुचित रूप से देश में घमण्ड किया[4] तथा समझ लिया कि हमारी ओर लौटाये ही नहीं जायेंगे।

فَأَخَذْنَٰهُ وَجُنُودَهُۥ فَنَبَذْنَٰهُمْ فِى ٱلْيَمِّ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) अन्त में हमने उसे तथा उसकी सेना को पकड़ लिया तथा समुद्र में डूबो दिया,[5] अब देख ले कि उन पापियों का अन्त कैसा कुछ हुआ ?

---

[1]अर्थात मिट्टी को अग्नि में तपा कर ईंटें बना। हामान, फ़िरऔन का मन्त्री एवं परामर्श दाता एवं उसके शासन का प्रबन्धक था।

[2]अर्थात एक ऊँचा तथा सुदृढ़ भवन निर्मित कर, जिस पर चढ़कर मैं आकाश पर यह देख सकूँ कि वहाँ मेरे अतिरिक्त कोई अन्य प्रभु है ?

[3]अर्थात मूसा (अलैहिस्सलाम) जो यह दावा करता है कि आकाशों पर प्रभु है जो अखिल जगत का पालनहार है, मैं तो उसे झूठा समझता हूँ।

[4]धरती से तात्पर्य मिस्र की धरती है जहाँ फ़िरऔन राज्य करता था तथा अहंकार का अर्थ बिना अधिकार के अपने को उच्च समझना है। अर्थात उनके पास कोई प्रमाण ऐसा न था जो मूसा के प्रमाण एवं चमत्कारों का खण्डन कर सकता परन्तु अहंकार अपितु शत्रुता का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने हठधर्मी एवं इंकार का मार्ग अपनाया।

[5]अर्थात जब उनका कुफ़्र तथा अहंकार असीम हो गया तथा वे किसी प्रकार से भी ईमान लाने को तैयार नहीं हुए तो अन्त में एक दिन प्रातः काल हमने उन्हें नदी में डूबो दिया। (इसका विवरण *सूरः अल-शुअरा* में गुजर चुका है)

(४१) तथा हमने उन्हें ऐसे अगुवा बना दिये कि लोगों को नरक की ओर बुलायें[1] तथा क़ियामत के दिन कदापि सहायता न किये जायें।

وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَدْعُونَ إِلَى ٱلنَّارِ ۖ وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

(४२) तथा हमने इस दुनिया में भी उनके पीछे अपनी धिक्कार लगा दिया, तथा क़ियामत के दिन भी वह बुरी दुर्दशा वाले लोगों में से होंगे।[2]

وَأَتْبَعْنَٰهُمْ فِى هَٰذِهِ ٱلدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ هُم مِّنَ ٱلْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾

(४३) तथा उन पूर्वकालीन लोगों को विध्वस्त करने के पश्चात हमने मूसा को ऐसी किताब प्रदान की[3] जो लोगों के लिए प्रमाण तथा प्रकाश एवं कृपा होकर आयी थी[4] ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर लें।[5]

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ مِنۢ بَعْدِ مَآ أَهْلَكْنَا ٱلْقُرُونَ ٱلْأُولَىٰ بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾

(४४) तथा तूर की पश्चिमी दिशा की ओर जब कि हमने मूसा को आदेश की प्रकाशना (वह्यी) पहुँचायी थी, न तो तू उपस्थित था न तू दर्शकों में से था।[6]

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ ٱلْغَرْبِىِّ إِذْ قَضَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَى ٱلْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٤٤﴾

---

[1]अर्थात जो भी उनके पश्चात ऐसे लोग होंगे जो अल्लाह के एक होने अथवा उसके अस्तित्व को अस्वीकार करेंगे तो उनके प्रमुख तथा अगुवा फ़िरऔन ही समझे जायेंगे, जो नरक की ओर बुलाने वाले हैं।

[2]अर्थात संसार में भी अपमान एवं अनादर उनका भाग्य बना तथा आख़िरत में भी वे दुर्दशा में होंगे अर्थात मुख काले तथा नयन पीले। जैसाकि नरकवासियों के वर्णन में आता है।

[3]अर्थात फ़िरऔन तथा उसके सम्प्रदाय अथवा नूह के समुदाय तथा आद एवं समूद के समुदाय आदि के विनाश के पश्चात मूसा को किताब (तौरात) प्रदान की गई।

[4]जिससे वे सत्य को पहचान लें तथा उसे अपना लें तथा अल्लाह की कृपा के पात्र हो जायें।

[5]अर्थात अल्लाह के उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त करें तथा अल्लाह पर ईमान लायें तथा उसके पैग़म्बरों का अनुसरण करें, जो उन्हें भलाई, सन्मार्ग एवं वास्तविक सफलता की ओर बुलाते हैं।

[6]अर्थात तूर पर्वत पर जब हमने मूसा से वार्तालाप किया तथा उसे प्रकाशना एवं रिसालत से अलंकृत किया, हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), तू न वहाँ उपस्थित

وَلَٰكِنَّآ أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ ٱلْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنتَ ثَاوِيًا فِىٓ أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِنَا وَلَٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) परन्तु हमने बहुत से वंशों को पैदा किया [1] जिन पर लम्बी अवधि व्यतीत हो गयी[2] तथा न तू मदयन का निवासी था[3] कि उनके समक्ष हमारी आयतों का पाठ करता, बल्कि हम ही रसूलों को भेजने वाले रहे।[4]

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ ٱلطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ

(४६) तथा न तू तूर की ओर था जबकि हमने आवाज़ दी [5] बल्कि यह तेरे प्रभु की ओर से एक कृपा है,[6] इसलिए की तू उन लोगों को

था तथा न इस दृश्य के दर्शकों में से था। बल्कि यह परोक्ष की वे बातें हैं जिसे हम प्रकाशना के द्वारा तुझे बता रहे हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि तू अल्लाह का सच्चा पैग़म्बर है, क्योंकि न तो ये बातें तूने किसी से सीखी हैं तथा न स्वयं ही उनका दर्शन ही किया है। यह विषय अन्य स्थानों पर भी वर्णित है, जैसे *सूरः आले इमरान*-४४, *सूरः हूद*-४९ तथा १००, *सूरः यूसुफ़* १०२ *सूरः ताहा*-९९ आदि आयतें।

[1] قُرُونٌ (क़ुरून) बहुवचन है قَرْنٌ (क़र्न) का, जिसका अर्थ है युग। परन्तु यहाँ सम्प्रदायों के अर्थ में है, अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आपके तथा मूसा के मध्य जो कालान्तर है उसमें हमने कई सम्प्रदाय पैदा किये।

[2]अर्थात समय के परिवर्तन से धर्म विधान तथा धर्मादेश भी बदल गये तथा लोग भी धर्म को भूल गये, जिसके कारण उन्होंने अल्लाह के आदेशों को पीठ के पीछे डाल दिया तथा उसके वचन को भूल बैठे तथा इस प्रकार इसकी आवश्यकता उत्पन्न हुई कि एक नये नवी को अवतरित किया जाये अथवा यह अर्थ है कि लम्बी अवधि के कारण अरब के लोग नबूअत तथा रिसालत को बिल्कुल भुला बैठे, इसलिए आपकी नबूअत पर उन्हें आश्चर्य हो रहा है तथा उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं।

[3]जिस से आप स्वयं इस घटना के विवरण से परिचित हो जाते।

[4]तथा इसी नियम के अनुसार हमने आपको रसूल बनाकर भेजा है तथा पिछली घटनाओं एवं कथाओं से आपको परिचित कर रहे हैं।

[5]अर्थात यदि आप सच्चे रसूल न होते तो मूसा की इस घटना का ज्ञान भी आपको न होता।

[6]अर्थात आपका यह ज्ञान, अवलोकन तथा दर्शन का परिणाम नहीं है बल्कि आपके प्रभु की कृपा है कि उसने आपको नवी बनाया तथा प्रकाशना से अलंकृत किया।

قَوْمًا مَّآ أَتَىٰهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾

सतर्क कर दे जिनके पास तुझ से पूर्व कोई डराने वाला नहीं पहुँचा,[1] क्या आश्चर्य कि वह शिक्षा ग्रहण कर लें।

وَلَوْلَآ أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا۟ رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ وَنَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा यदि ये बात न होती कि उन्हें उनके अपने हाथों आगे भेजे हुए कर्मों के कारण कोई विपत्ति पहुँचती तो यह कह उठते कि हे हमारे प्रभु ! तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते तथा ईमान वालों में हो जाते।[2]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ ٱلْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا۟

(४८) फिर जब उनके पास हमारी ओर से सत्य आ पहुँचा, तो कहते हैं कि यह वह

---

[1]इससे तात्पर्य मक्कावासी तथा अरब हैं जिनकी ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व कोई नबी नहीं आया, क्योंकि आदरणीय इब्राहीम के पश्चात नबूवत का क्रम इब्राहीम के परिवार ही में रहा तथा उनका अवतरण इस्राईल की सन्तान की ओर ही होता रहा। इस्माईल की सन्तान अर्थात अरबों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रथम नबी थे तथा नबूअत के क्रम को पूरा करने वाले थे। उनकी ओर नबी (संदेष्टा) भेजने की आवश्यकता इसलिए नहीं समझी गयी होगी कि अन्य नबियों का संदेश तथा उनका आमन्त्रण उनको पहुँचता रहा होगा। क्योंकि इसके बिना उनके लिए कुफ़्र तथा मिश्रणवाद पर दृढ़ रहने के लिए उनके पास बहाना रह जायेगा तथा यह बहाना अल्लाह तआला ने किसी के लिए शेष नहीं छोड़ा है।

[2]अर्थात उनके इसी बहाने को समाप्त करने के लिए हमने आपको उनकी ओर नबी बनाकर भेजा है। क्योंकि लम्बी अवधि के कारण भूतपूर्व नबियों की शिक्षाओं में परिवर्तन हो चुका है तथा उनका आमन्त्रण भुलाया जा चुका है, तथा ऐसे ही समय पर किसी नये नबी की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने अन्तिम पैग़म्बर परम आदरणीय मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षायें (क़ुरआन तथा हदीस) को परिवर्तित होने एवं हेर-फेर से सुरक्षित रखा है तथा ऐसा प्राकृतिक प्रबन्ध कर दिया है कि जिससे आपका आमन्त्रण संसार के कोने-कोने में पहुँच गया है तथा निरन्तर पहुँच रहा है ताकि किसी नये नबी की आवश्यकता ही शेष न रहे। तथा जो व्यक्ति इस 'आवश्यकता' का दावा करके नबूअत का ढोंग रचता है, वह झूठा तथा दज्जाल है।

لَوْلَآ أُوتِيَ مِثْلَ مَآ أُوتِيَ مُوسَىٰٓ ۚ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا۟ بِمَآ أُوتِيَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۖ قَالُوا۟ سِحْرَانِ تَظَٰهَرَا وَقَالُوٓا۟ إِنَّا بِكُلٍّ كَٰفِرُونَ ﴿٤٨﴾

क्यों नहीं दिया गया जैसे दिये गये थे मूसा ।[1] अच्छा, तो क्या मूसा को इससे पूर्व जो कुछ दिया गया था उसके साथ लोगों ने कुफ़्र (इंकार) नहीं किया था ?[2] (खुलकर) कहा था कि ये दोनों जादूगर हैं, जो एक-दूसरे के सहायक हैं तथा हम तो उन सबको अस्वीकार करने वाले हैं ।[3]

قُلْ فَأْتُوا۟ بِكِتَٰبٍ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَآ أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) कह दीजिए कि यदि सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से अधिक पथ प्रदर्शन वाली हो, मैं उसी का अनुसरण करूँगा ।[4]

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَكَ فَٱعْلَمْ

(५०) फिर यदि ये तेरी न मानें[5] तो तू विश्वास कर ले कि यह केवल अपनी इच्छाओं का

---

[1]अर्थात आदरणीय मूसा जैसे चमत्कार, जैसे लाठी का सर्प बन जाना तथा हाथ का चमकना आदि ।

[2]अर्थात माँग के अनुसार चमत्कार दिखा भी दिये जायें तो क्या लाभ ? जिन्हें ईमान नहीं लाना है, वह हर प्रकार की निशानियों के देख लेने के पश्चात ईमान से वंचित ही रहेंगे । क्या मूसा के चमत्कार के पश्चात फ़िरऔन तथा उसके अनुयायी मुसलमान हो गये थे, उन्होंने कुफ़्र नहीं किया ? अथवा يَكْفُرُوا का सर्वनाम मक्का के क़ुरैश के लिए प्रयोग हुआ है अर्थात क्या उन्होंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत से पूर्व मूसा के साथ कुफ़्र नहीं किया ?

[3]प्रथम भावार्थ के आधार पर दोनों से तात्पर्य आदरणीय मूसा तथा हारून होंगे तथा سِحْرَان (दो जादू) का अर्थ ساحران (दो जादूगर) होगा । तथा द्वितीय भावार्थ में इससे क़ुरआन तथा तौरात तात्पर्य होंगे अर्थात दोनों जादू हैं, जो एक-दूसरे के सहायक हैं तथा हम सबके अर्थात मूसा तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के न मानने वाले हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात यदि तुम इस दावे में सच्चे हो कि क़ुरआन मजीद तथा तौरात दोनों जादू हैं तो तुम कोई अन्य अल्लाह की पुस्तक प्रस्तुत करो जो उनसे अधिक मार्गदर्शक हो, मैं उसका अनुसरण कर लूँगा क्योंकि मैं तो मार्गदर्शन का इच्छुक तथा अनुयायी हूँ ।

[5]अर्थात क़ुरआन तथा तौरात से अधिक मार्गदर्शन प्रदान करने वाली किताब प्रस्तुत न कर सके तथा निःसंदेह नहीं कर सकेंगे ।

اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾

अनुसरण कर रहे हैं तथा उससे अधिक भटका हुआ कौन है ? जो अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हुआ हो[1] बिना अल्लाह के मार्गदर्शन के, नि:संदेह अल्लाह तआला अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता ।[2]

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा हम निरन्तर लोगों के लिए अपनी वाणी भेजते रहे[3] ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर लें ।[4]

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५२) जिसको हमने इससे पूर्व किताब प्रदान की वह तो इस पर ईमान रखते हैं ।[5]

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ

(५३) तथा जब (उसकी आयतें) उनके समक्ष पढ़ी जाती हैं तो वे यह कह देते हैं कि इसके

---

[1]अर्थात अल्लाह की ओर से अवतरित मार्गदर्शन को छोड़कर इन्द्रियों का अनुकरण करना सबसे बड़ा भटकावा है तथा इस आधार पर मक्का के ये क़ुरैश सबसे अधिक भटके हुए हैं, जो इसी बात का कार्यान्वयन कर रहे हैं ।

[2]इसमें अल्लाह के उसी विधि का वर्णन है, जो अत्याचारियों के लिए उसके यहाँ निर्धारित है कि वे मार्गदर्शन प्राप्त करने से वंचित रहते हैं । इसलिए कि नबियों को झुठलाना, अल्लाह की आयतों से मुख मोड़ना तथा निरन्तर कुफ़्र, द्वेष एवं अहंकार ऐसे अपराध हैं कि जिससे सत्य को स्वीकार करने एवं प्रभावित होने की योग्यता समाप्त हो जाती है । उसके पश्चात मनुष्य अत्याचार, पाप, कुफ़्र एवं शिर्क के अंधकार में ही भटकता रहता है, उसे ईमान का प्रकाश प्राप्त नहीं होता ।

[3]अर्थात एक रसूल के पश्चात दूसरा रसूल, एक किताब के पश्चात दूसरी किताब हम भेजते रहे तथा इस प्रकार निरन्तर हम अपनी बात लोगों तक पहुँचाते रहे ।

[4]उद्देश्य इससे यह था कि लोग पिछले लोगों के परिणाम से डरकर तथा हमारी बातों से शिक्षा ग्रहण करके ईमान ले आयें ।

[5]इससे तात्पर्य वे यहूदी हैं जो मुसलमान हो गये थे, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि, अथवा वे इसाई हैं जो इथोपिया से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आये थे तथा आपके पवित्र मुख से क़ुरआन करीम सुनकर मुसलमान हो गये थे । (इब्ने कसीर)

إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝

हमारे प्रभु की ओर से सत्य होने पर हमारा ईमान (विश्वास) है, हम तो इससे पूर्व ही मुसलमान हैं।[1]

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝

(५४) यह अपने किये हुए धैर्य के बदले में दो-दो गुने बदले प्रदान किये जायेंगे।[2] यह पुण्य से पाप को दूर कर देते हैं[3] तथा हमने जो इन्हें दे रखा है उसमें से देते रहते हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ

(५५) तथा जब व्यर्थ बात[4] कान में पड़ती है तो उससे अलग हो लेते हैं तथा कहते हैं कि हमारे कर्म हमारे लिए तथा तुम्हारे कर्म

---

[1]यह उसी वास्तविकता की ओर संकेत है जिसे क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णित किया गया है कि प्रत्येक काल में अल्लाह के पैग़म्बरों ने जिस धर्म का प्रचार किया है, वह इस्लाम ही था तथा उन नवियों के आमन्त्रण पर ईमान लाने वाले मुसलमान ही कहलाते थे। यहूदी अथवा इसाई आदि के पारिभाषिक शब्द लोगों के अपने गढ़े हुए हैं जिनका अविष्कार वाद में हुआ। इसी आधार पर नवी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वाले अहले किताव (यहूद अथवा इसाईयों) ने कहा कि हम तो पहले से ही मुसलमान चले आ रहे हैं अर्थात पूर्व के नवियों के अनुयायी तथा उन पर ईमान रखने वाले हैं।

[2]धैर्य से तात्पर्य हर प्रकार की परस्थितियों में नवियों तथा अल्लाह की किताब पर ईमान तथा उस पर दृढ़ता से स्थिर रहना है। प्रथम किताव आयी तो उस पर, उसके पश्चात दूसरी पर ईमान रखा। पहले नवी पर ईमान लाये, उसके पश्चात दूसरा नवी आ गया तो उस पर ईमान लाये। उनके लिए दुगुना वदला है हदीस में भी उनके इस महत्व का वर्णन किया गया है। नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "तीन व्यक्तियों के लिए दोगुना वदला है, उनमें से एक वह अहले किताब है जो अपने नवी पर ईमान रखता था तथा फिर मुझ पर ईमान ले आया -----)" (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब वजूबिल ईमान बेरिसालते नबीयेना)

[3]अर्थात अपकार का उत्तर अपकार से नहीं देते अपितु क्षमा कर देते तथा अनदेखी से काम लेते हैं।

[4]यहाँ लग़्व से तात्पर्य वह अपशब्द तथा धर्म के साथ उपहास है जो मूर्तिपूजक करते थे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾

तुम्हारे लिए, तुम पर सलाम हो,[1] हम अशिक्षितों से (उलझना) नहीं चाहते।

إِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ أَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) आप जिसे चाहें मार्गदर्शन नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे मार्गदर्शन प्रदान करता है। मार्गदर्शन प्राप्त लोगों से वही भली-भाँति परिचित है।[2]

وَقَالُوْٓا إِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا ۗ أَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى إِلَيْهِ ثَمَرٰتُ

(५७) तथा कहने लगे कि यदि हम आपके साथ होकर मार्गदर्शन के अनुपालक बन जायें तो हम अपने देश से उचक लिये जायें,[3] क्या हमने उन्हें शान्त एवं सुरक्षित एवं शान्ति

---

[1]यह सलाम अभिवादन वाला सलाम नहीं है बल्कि पीछा छुड़ाने वाला सलाम है अर्थात हम तुम जैसे अशिक्षित असभ्य व्यक्तियों से तर्क-वितर्क वार्तालाप करने को तैयार ही नहीं। जैसे हिन्दी में कहते हैं, "अशिक्षितों को दूर से सलाम", स्पष्ट है सलाम से तात्पर्य सम्बोधन को टालना ही है।

[2]यह आयत उस समय अवतरित हुई जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुभचिन्तक तथा दुख के साथी चाचा अबू तालिब की मृत्यु का समय आ गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रयत्न किया कि चाचा अपने मुख से एक बार لا إله إلا الله कह दें ताकि क़ियामत के दिन मैं अल्लाह से उनकी क्षमा के लिए सिफ़ारिश कर सकूं। परन्तु वहाँ कुरैश के अन्य प्रमुखों की उपस्थिति के कारण अबू तालिब ईमान स्वीकार करने से वंचित रहे तथा कुफ़्र की अवस्था में उनका अन्त हो गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात का अत्यन्त दुख था। उस समय अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर स्पष्ट किया कि आपका कार्य केवल तर्क करना तथा संदेश पहुँचाना एवं मार्गदर्शन है। परन्तु प्रकाश के मार्ग पर चला देना, यह हमारा कार्य है। मार्गदर्शन उसी को प्राप्त होगा जिसे हम सन्मार्ग प्रदान करना चाहें, न कि वह जिसे आप मार्ग पर देखना प्रिय समझें। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-क़सस*, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब अव्वलुल ईमान क़ौलो ला इलाह इल्लल्लाह)

[3]अर्थात हम जहाँ हैं वहाँ हमें रहने न दिया जायेगा तथा हमें दुखों से अथवा विरोधियों से लड़ाई का सामना करना पड़ेगा। यह कुछ काफ़िरों ने ईमान न लाने का कारण प्रस्तुत किया, अल्लाह ने उत्तर दिया।

كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٥٧

सम्मान वाले 'हरम' में स्थान नहीं दिया,[1] जहाँ हर प्रकार के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से जीविका के रूप में हैं ?[2] परन्तु उनमें से अधिकतर कुछ नहीं जानते।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝٥٨

(५८) तथा हमने बहुत सी वे बस्तियाँ ध्वस्त कर दीं जो अपनी सुख-सुविधा में इतराने लगी थीं। यह हैं उनके निवास स्थान जो उनके पश्चात बहुत ही कम आबाद किये गये।[3] तथा हम ही हैं अन्ततः सब कुछ के उत्तराधिकारी।[4]

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي

(५९) तथा तेरा प्रभु किसी एक बस्ती को भी उस समय तक ध्वस्त नहीं करता, जब तक कि उनकी किसी बड़ी बस्ती में अपना कोई पैग़म्बर न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें

---

[1]अर्थात उनका यह तर्क अनुचित है, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उस नगर को जिसमें रहते हैं, शान्ति वाला बनाया है। जब यह नगर उनके कुफ़्र तथा शिर्क की अवस्था में शान्ति का स्थान था तो क्या इस्लाम धर्म धारण कर लेने के पश्चात उनके लिए शान्ति स्थान नहीं रहेगा ?

[2]यह मक्का नगर की वह विशेषता है जिसका प्रत्येक वर्ष लाखों हाजी तथा उमरह करने वाले प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं कि मक्का नगर में पैदावार न होने के उपरान्त अत्यधिक मात्रा में हर प्रकार के फल बल्कि दुनिया भर के सामान सुलभ होते हैं।

[3]यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम देखते नहीं कि अल्लाह के उपकार से लाभान्वित होकर अल्लाह की कृतघ्नता तथा अवहेलना करने वालों का परिणाम क्या हुआ ? आज उनकी अधिकतर आबादी खण्डहर बनी पड़ी है अथवा केवल इतिहास के पृष्ठों पर नाम रह गया है। तथा अब आते-जाते यात्री ही कुछ क्षण के लिए विश्राम कर लें तो कर लें, उनके दुर्भाग्य तथा अशुभ होने के कारण कोई भी उनमें स्थाई रूप से रहना प्रिय नहीं समझता।

[4]अर्थात उनमें से तो कोई भी शेष नहीं रहा जो उनके मकानों, धन तथा धरती का उत्तराधिकारी होता।

الْقُرٰىٓ اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝٥٩

पढ़कर सुना दे,[1] तथा हम बस्तियों को उस समय ध्वस्त करते हैं जब कि वहाँ के रहने वाले अत्याचार एवं क्रूरता पर कटीबद्ध हो जायें ।[2]

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٠

(६०) तथा तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह केवल साँसारिक जीवन का सामान है तथा उसकी शोभा है, हाँ, अल्लाह के पास जो है वह सर्वश्रेष्ठ तथा स्थाई है। क्या तुम नहीं समझते ?[3]

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٦١

(६१) क्या वह व्यक्ति जिसे हमने पुण्य वचन दिया है जिसको वह निश्चित रूप से पाने वाला है, उस व्यक्ति के समान हो सकता है जिसे हमने साँसारिक जीवन के कुछ सुख यूँ ही प्रदान कर दिये, पुन: अंत में वह क़ियामत के दिन (पकड़ा बाँधा) उपस्थित किया जायेगा ?[4]

---

[1]अर्थात तर्कों को पूर्ण किये बिना किसी को नाश नहीं करता। أُمِّهَا (बड़ी बस्ती) के शब्द से यह भी ज्ञात होता है कि प्रत्येक छोटे-बड़े क्षेत्र में नबी नहीं आये, बल्कि केन्द्रीय स्थानों पर नबी आते रहे तथा छोटे क्षेत्र उनके अधीन आ जाते थे।

[2]अर्थात नबी भेजने के पश्चात वे बस्ती वाले ईमान न लाते तथा कुफ़्र एवं शिर्क पर दृढ़ रहते तो फिर उन्हें ध्वंस कर दिया जाता। यही विषय सूर: हूद-११७ में भी वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात क्या इस वास्तविकता से भी तुम अनभिज्ञ हो कि यह धरती तथा इसकी शोभा अस्थाई भी है तथा तुच्छ भी, जबकि अल्लाह तआला ने ईमानवालों के लिए अपने पास जो उपहार एवं सुख-सुविधायें तैयार कर रखी हैं, वे स्थाई भी हैं तथा उत्तम भी। हदीस में हैं, अल्लाह की सौगन्ध, आख़िरत (परलोक) की अपेक्षा ऐसी है जैसे तुम में से कोई व्यक्ति अपनी उँगली समुद्र में डूबा कर निकाल ले, फिर देखे कि समुद्र की तुलना में उसकी उँगली में कितना पानी होगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबु फ़नाईद दुनिया व बयानिल हश्र)

[4]अर्थात दण्ड तथा यातना का अधिकारी होगा। तात्पर्य यह है कि ईमानवाले अल्लाह के वचन के अनुसार वरदानों से लाभान्वित तथा अवज्ञाकारी यातनाग्रस्त होंगे। क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पुकार कर कहेगा कि तुम जिन्हें अपनी समझ से मेरा साझीदार ठहरा रहे थे कहाँ हैं ?[1]

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰٓؤُلَآءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَآ أَغْوَيْنَٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ مَا كَانُوٓا۟ إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) जिन पर बात आ चुकी वे उत्तर देंगे[2] कि हे हमारे प्रभु ! यही वे हैं जिन्हें हमने बहका रखा था,[3] हमने उन्हें इसी प्रकार भटकाया जिस प्रकार हम भटके थे,[4] हम तेरी सेवा में अपने आपको इनसे अलग करते हैं,[5] यह हमारी पूजा नहीं करते थे ।[6]

---

[1]अर्थात वे देवी-देवता (मूर्तियाँ) अथवा व्यक्ति, जिनको तुम दुनिया में मेरी पूजा में सम्मिलित करते थे, उन्हें सहायता के लिए पुकारते थे तथा उनके नाम के भोग-प्रसाद चढ़ाते थे, आज कहाँ हैं ? क्या वे तुम्हारी सहायता कर सकते तथा मेरी यातना से बचा सकते हैं ? यह निन्दित करने तथा फटकारने के लिए अल्लाह तआला उनसे कहेगा, वरन् वहाँ किस की शक्ति होगी कि अल्लाह के समक्ष मुख खोले ? यही विषय अल्लाह तआला ने *सूर: अल-अनआम* आयत ९४ तथा अन्य बहुत से स्थानों पर वर्णन किया है ।

[2]अर्थात जो अल्लाह की यातना के अधिकारी घोषित हो चुके हैं, जैसे बड़े-बड़े शैतान (राक्षस) तथा कुफ्र और शिर्क के प्रचारक, वह कहेंगे ।

[3]यह उन अशिक्षित जनसमूह की ओर संकेत है जिनको कुफ्र तथा पथभ्रष्टता के प्रचारकों तथा शैतानों ने भटका दिया था ।

[4]अर्थात हम तो भटके हुए थे ही तथा इनको भी अपने साथ भटकाये रखा था । अर्थ यह है कि हमने उन पर कोई दबाव नहीं डाला था, बस हमारे तनिक संकेत पर हमारी तरह ही उन्होंने भी पथभ्रष्टता का मार्ग अपना लिया ।

[5]अर्थात हम उनसे दुखी तथा अलग हैं, हमारा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है । अर्थ यह है कि सेवक तथा स्वामी, गुरू तथा शिष्य एक-दूसरे के शत्रु होंगे ।

[6]बल्कि वास्तव में वे अपनी इच्छाओं का अनुकरण करते थे । अर्थात वे देवता जिन की लोग दुनिया में पूजा करते थे, इस बात से ही इंकार कर देंगे कि लोग उनकी पूजा करते थे । इस विषय को क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णित किया गया है, जैसे *सूर: अल-अनआम-४९, सूर: मरियम-८१* तथा ८२, *सूर: अल-अहक़ाफ़-५* तथा ६ *अल-अनकबूत-२५, अल-बक़र:-१६६* तथा १६७ आदि इसी प्रकार की आयतें ।

(६४) तथा कहा जायेगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ[1] तो वे बुलायेंगे परन्तु वे उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे तथा सब यातना देख लेंगे,[2] काश ये लोग मार्गदर्शन पा लेते ![3]

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾

(६५) तथा उस दिन उन्हें बुलाकर पूछेगा कि तुमने नबियों को क्या उत्तर दिया था ?[4]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

(६६) फिर तो उस दिन उनके सारे समाचार अंधे हो जायेंगे तथा एक-दूसरे से प्रश्न तक न करेंगे ।[5]

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

---

[1]अर्थात उनसे सहायता माँगो जिस प्रकार दुनिया में माँगते थे । क्या वे तुम्हारी सहायता करते हैं ? तो वे पुकारेंगे । परन्तु वहाँ किसमें साहस होगा कि जो यह कहे कि हाँ हम तुम्हारी सहायता करते हैं ?

[2]अर्थात विश्वास कर लेंगे कि हम सब नरक का ईंधन बनने वाले हैं ।

[3]अर्थात यातना देख लेने के पश्चात कामना करेंगे कि काश दुनिया में प्रकाश का मार्ग अपना लेते तो आज वे इस परिणाम से बच जाते । *सूर: अल-कहफ़*-५२ तथा ५३ में भी इस विषय का वर्णन है ।

[4]इससे पूर्व की आयतों (मंत्रों) में एकेश्वरवाद से सम्बन्धित प्रश्न था । यह दूसरी घोषणा रिसालत के विषय में है अर्थात तुम्हारी ओर हमने रसूल भेजे थे, तुमने उनके साथ क्या व्यवहार किया, उनका आमन्त्रण स्वीकार किया था ? जिस प्रकार क़ब्र में प्रश्न होता है कि तेरा पैग़म्बर कौन है तथा तेरा धर्म कौन सा है ? ईमान वाले तो ठीक उत्तर दे देते हैं परन्तु काफ़िर कहता है هَاه هَاه لا أدري (हाय ! मुझे तो कुछ ज्ञात नहीं) । उसी प्रकार क़ियामत के दिन भी उन्हें इस प्रश्न का उत्तर समझ में न आयेगा । इसीलिए आगे फ़रमाया उन पर सभी सूचनायें अंधी हो जायेंगी अर्थात कोई तर्क उनकी समझ में न आयेगा जिसे वे प्रस्तुत कर सकें । यहाँ तर्कों को सूचनाओं से तुलना करके इस ओर संकेत किया गया है कि उनके झूठे विश्वास के लिए वास्तव में उनके पास कोई तर्क है ही नहीं, केवल कथायें तथा कहावतें हैं । जैसे आज भी क़ब्र पूजकों के पास मनगढ़न्त चमत्कारों की कथाओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं ।

[5]क्योंकि उन्हे विश्वास हो चुका होगा कि सब नरक में प्रवेश पाने वाले हैं ।

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

(६७) हाँ, जो व्यक्ति क्षमा माँग कर ईमान ले आये तथा पुण्य के कार्य करे विश्वास है कि वह मोक्ष प्राप्त करने वालों में से हो जायेगा।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा आप का प्रभु जो चाहता है पैदा करता है तथा जिसे चाहता है, उनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं,[1] अल्लाह के लिए ही पवित्रता है, वह उच्च है प्रत्येक उस वस्तु से जिसे लोग साझा करते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा आपका प्रभु सब कुछ जानता है जो कुछ वे अपने सीने में छिपाते हैं तथा जो कुछ व्यक्त करते हैं।

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा वही अल्लाह है उसके अतिरिक्त पूजने योग्य कोई अन्य नहीं, लोक तथा परलोक में उसी की प्रशंसा है। उसी के लिए शासन है तथा उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾

(७१) कह दीजिए कि देखो तो सही, यदि अल्लाह तआला रात ही रात क़ियामत तक निरन्तर कर दे तो सिवाय अल्लाह के कौन देवता है जो तुम्हारे पास दिन का प्रकाश लाये ? क्या तुम सुनते नहीं हो ?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ

(७२) पूछिये कि यह भी बता दो कि यदि अल्लाह (तआला) तुम पर निरन्तर क़ियामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई देवता है जो तुम्हारे पास रात्रि लाये,

[1]अर्थात अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है। उसके समक्ष किसी को मूलत: कोई अधिकार ही नहीं, तो फिर कोई अन्य सर्वशक्तिमान कैसे हो सकता है।

يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾

जिसमें तुम विश्राम कर सको, क्या तुम देख नहीं रहे हो ?

وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा उसी ने तो तुम्हारे लिए अपनी कृपा एवं दया से दिन-रात निर्धारित कर दिये हैं कि रात्रि को तुम विश्राम कर सको तथा दिन में उसकी (भेजी हुई) जीविका की खोज करो ।[1] यह इसलिए कि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो ।[2]

---

[1]दिन तथा रात, यह दोनों अल्लाह के बहुत बड़े वरदान हैं । रात्रि को अंधकारमय बनाकर लोगों के लिए विश्राम का समय प्रदान किया । इस अंधकार के कारण सम्पूर्ण सृष्टि सोने तथा विश्राम करने के लिए बाध्य है । वरन् यदि विश्राम करने तथा सोने के अपने-अपने समय होते तो कोई भी पूर्णरूप से सोने का अवसर न पाता, जबकि व्यवसाय तथा व्यवपार को सुचारू रूप से चलाने के लिए निद्रा का पूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक है । इसके बिना स्फूर्ति प्राप्त नहीं होती । यदि कुछ लोग सो रहे होते तथा कुछ लोग व्यवसाय में व्यस्त होते तो सोने वालों की निद्रा में व्यवधान पड़ता, इसके अतिरिक्त लोग एक-दूसरे के सहयोग से वंचित रहते, जबकि दुनिया का प्रबन्ध एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग पर आधारित है, इसलिए अल्लाह ने रात को अंधकार प्रदान किया । इसी प्रकार दिन को प्रकाशमय बनाया ताकि प्रकाश के कारण मनुष्य अपने व्यवसाय तथा व्यवपार सुचारू रूप से कर सके । दिन का यह प्रकाश न होता तो मनुष्य को जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता उसे प्रत्येक व्यक्ति सरलता से समझता तथा उसका ज्ञान रखता है ।

अल्लाह तआला ने अपने इन वरदानों के माध्यम से अपने एक (अकेले) होने को प्रमाणित किया है कि बताओ यदि अल्लाह तआला दिन तथा रात्रि की इस व्यवस्था को समाप्त करके सदैव के लिए तुम पर रात्रि थोप दे तो क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई देवता ऐसा है जो तुम्हें दिन का प्रकाश प्रदान कर दे ? अथवा यदि वह सदैव के लिए दिन ही दिन रखे तो क्या तुम्हें रात्रि का अंधकार उपलब्ध करा सकता है जिसमें तुम विश्राम कर सको ? नहीं, कदापि नहीं । यह केवल अल्लाह की अत्यन्त दया एवं कृपा है कि उसने दिन और रात्रि का ऐसा नियन्त्रित नियम बनाया है कि रात्रि आती है तो दिन का प्रकाश समाप्त हो जाता है तथा सम्पूर्ण सृष्टि विश्राम कर लेती है तथा रात्रि जाती है तो दिन के प्रकाश से समस्त संसार की सभी वस्तुयें स्पष्ट हो जाती हैं तथा मनुष्य परिश्रम तथा कमाई द्वारा अल्लाह की कृपा (जीविका) की खोज करता है ।

[2]अर्थात अल्लाह की प्रशंसा एवं महिमा का भी वर्णन करो (यह मौखिक कृतज्ञता है) तथा अल्लाह के प्रदान किये हुए धन, शक्ति एवं योग्यता को उसके आदेशों एवं निर्देशों के अनुसार प्रयोग करो (यह व्यवहारिक कृतज्ञता है)

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा जिस दिन उन्हें पुकार कर अल्लाह (तआला) कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे वे कहाँ हैं ?

وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوٓا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा हम प्रत्येक सम्प्रदाय से एक गवाह अलग कर लेंगे[1] तथा कह देंगे कि अपने तर्क प्रस्तुत करो ।[2] तो उस समय जान लेंगे कि सत्य अल्लाह की ओर है[3] तथा जो कुछ झूठ वे गढ़ रहे थे सब उनके पास से खो जायेंगे ।[4]

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوٓأُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ

(७६) क़ारून था तो मूसा के समुदाय से परन्तु उन पर अत्याचार करने लगा था,[5] हमने उसे इतना अधिक कोष दे रखा था कि कई-कई शक्तिशाली लोग कठिनाई से उसकी चाभियाँ उठा सकते थे ।[6] एक बार उसके समुदाय ने

---

[1]इस गवाह से तात्पर्य पैग़म्बर हैं । अर्थात प्रत्येक सम्प्रदाय के पैग़म्बर को उस सम्प्रदाय से अलग खड़ा कर देंगे ।

[2]अर्थात दुनिया में मेरे पैग़म्बरों के एकेश्वरवाद के आमन्त्रण के उपरान्त तुम जो मेरे साझीदार बनाते थे तथा मेरे साथ उनकी भी पूजा करते थे, उसका तर्क प्रस्तुत करो ।

[3]अर्थात वे परेशान एवं स्तब्ध खड़े होंगे, कोई उत्तर तथा तर्क उन्हें नहीं सूझेगा ।

[4]अर्थात उनके काम नहीं आयेगा ।

[5]अपने समुदाय इस्राईल की सन्तान पर उसका अत्याचार यह था कि अपने धन-सम्पत्ति के बाहुल्य के कारण उन की अवहेलना (शोषण) करता था । कुछ कहते हैं कि फ़िरऔन की ओर से ये अपने समुदाय इस्राईल की सन्तान पर कर्मचारी नियुक्त था तथा उन पर अत्याचार करता था ।

[6]تَنُوءُ का अर्थ है تَمِيلُ (झुकना), अर्थात जिस प्रकार कोई व्यक्ति भारी बोझ उठाता है तो बोझ के कारण इधर-उधर लड़खड़ाता है, उसकी चाभियों का बोझ इतना अधिक था कि एक समूह भी उसे उठाते समय कठिनाई तथा कष्ट का अनुभव करता था ।

إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

उससे कहा कि इतरा मत,[1] अल्लाह (तआला) इतराने वालों से प्रेम नहीं करता ।[2]

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा जो कुछ अल्लाह (तआला) ने तुझे प्रदान कर रखा है उसमें से आख़िरत के घर की खोज भी रख[3] तथा अपने साँसारिक भाग को भी न भूल[4] तथा जैसाकि अल्लाह ने तेरे ऊपर उपकार किया है तू भी सद्व्यवहार कर[5] तथा देश में उपद्रव की इच्छा न कर,[6] विश्वास कर कि अल्लाह तआला उपद्रवियों को प्रिय नहीं रखता है ।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ

(७८) क़ारून ने कहा कि यह सब कुछ मुझे मेरे अपने ज्ञान के कारण दिया गया है,[7] क्या

---

[1]अर्थात धन-सम्पति पर गर्व एवं घमण्ड मत कर कुछ ने कंजूसी अर्थ लगाया है, अर्थात कंजूसी न कर ।

[2]अर्थात गर्व तथा अहंकार करने वालों को अथवा कंजूसी करने वालों को प्रिय नहीं समझता ।

[3]अर्थात अपने धन को ऐसे स्थानों तथा मार्गों पर व्यय करो जो अल्लाह तआला को प्रिय हों । इस प्रकार आख़िरत बनेगी तथा वहाँ उसका तुझे प्रतिकार एवं प्रतिफल मिलेगा ।

[4]अर्थात दुनिया के उचित वस्तुओं में भी संतुलन के साथ व्यय कर । दुनिया की उचित वस्तुयें क्या हैं ? खाद्य, वस्त्र, घर एवं विवाह आदि । अर्थ यह है कि जिस प्रकार तुझ पर तेरे प्रभु का अधिकार है उसी प्रकार तेरे अपने प्राण, पत्नी, बच्चों एवं अतिथियों आदि का भी अधिकार है । प्रत्येक अधिकारी को उसका अधिकार दे ।

[5]अल्लाह ने तुझे धन प्रदान करके तुझ पर उपकार किया है, तू जीवों पर व्यय करके उनपर उपकार कर ।

[6]अर्थात तेरा उद्देश्य धरती पर आतंक (उपद्रव) फैलाना न हो । उसी प्रकार जीवों के साथ सदव्यवहार की जगह दुर्व्यवहार न कर, न पाप कर कि इन सभी बातों से आतंक फैलता है ।

[7]इन शिक्षाओं के उत्तर में उसने यह कहा । उसका प्रयोजन यह है कि मुझे धनार्जन तथा व्यापार की जो दक्षता है, यह धन तो उसका परिणाम एवं फल है, अल्लाह की कृपा तथा दया का इससे क्या सम्बन्ध है ? दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि अल्लाह ने

عِنْدِیْ ۖ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّأَكْثَرُ جَمْعًا ۖ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٧٨

अब तक उसे यह नहीं ज्ञात हुआ कि अल्लाह (तआला) ने उससे पूर्व बहुत सी बस्ती वालों को विध्वस्त कर दिया,जो उससे अत्यधिक शक्तिशाली तथा अत्यधिक धनवान थे,[1] तथा पापियों से उनके पापों की पूछताछ ऐसे समय नहीं की जाती ।[2]

मुझे यह धन प्रदान किया है तो उसने अपने ज्ञान के कारण दिया है कि मैं योग्य हूँ तथा मेरे लिए उसने यह पसन्द किया है । जैसे अन्य स्थान पर मनुष्यों का एक अन्य कथन अल्लाह तआला ने वर्णन किया है : "जब मनुष्य को दुख पहुँचता है तो हमें पुकारता है, फिर जब हम उसे अपनी अनुकम्पा प्रदान कर देते हैं तो कहता है,"

﴿إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ﴾

"मुझे यह वरदान इसलिए प्राप्त हुआ कि अल्लाह के ज्ञान में मैं इसके योग्य था ।" (*सूर: अल-क़सस-७८*)

एक अन्य स्थान पर फ़रमाया :"जब हम मनुष्यों पर दुख के पश्चात अपनी दया करते हैं तो कहता है ।"

﴿هٰذَا لِي﴾ أى هذا أستحقه

"यह तो मेरा अधिकार है ।" (*सूर: हा॰मीम॰अस्सजद:-५०*) (इब्ने कसीर)

कुछ कहते हैं कि क़ारून को कीमया (स्वर्ण बनाने) का ज्ञान आता था, यहाँ यही तात्पर्य है, इसी ज्ञान के आधार पर उसने इतना धन कमाया था । परन्तु इमाम इब्ने कसीर इस ज्ञान को सर्वथा झूठ तथा धोखा कहते हैं । कोई व्यक्ति इस बात की शक्ति नहीं रखता कि वह किसी वस्तु की वास्तविकता को परिवर्तित कर दे । इसलिए क़ारून के लिए भी यह सम्भव नहीं था कि वह दूसरी धातुओं को परिवर्तित करके स्वर्ण बना लिया करता तथा इस प्रकार धन का ढेर एकत्रित कर लेता ।

[1]अर्थात बल तथा धन की अधिकता यह श्रेष्ठता का कारण नहीं । यदि ऐसा होता तो पूर्वकालीन समुदाय नष्ट न होते । इसलिए क़ारून का अपने धन पर घमण्ड करने तथा उसे अपनी श्रेष्ठता का कारण बताने का कोई औचित्य नहीं ।

[2]अर्थात जब पाप इतनी अधिक संख्या में हो कि उनके कारण वह यातना का पात्र घोषित हो जाये तो उनसे पूछताछ नहीं की जाती बस सहसा उनको पकड़ लिया जाता है ।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾

(७९) अत: (क़ारून) पूरी शोभा के साथ[1] अपने समुदाय के जमघट में निकला,[2] तो सांसारिक जीवन के मतवालों ने कहा कि काश हमें किसी प्रकार वह मिल जाता जो क़ारून को दिया गया है, यह तो बड़ा ही सौभाग्यशाली है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा ज्ञानी लोग उन्हें समझाने लगे कि खेद की बात है, उत्तम वस्तु तो वह है जो पुण्य के रूप में उन्हें मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लायें तथा पुण्य के कर्म करें।[3] यह बात उन्हीं[4] के दिल में डाली जाती है जो धैर्यवान तथा सहनशील हों।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ

(८१) (अन्तत:) हमने उसे उसके महल सहित धरती में धंसा दिया,[5] तथा अल्लाह के अतिरिक्त

---

[1]अर्थात शोभा एवं श्रृंगार तथा सेवकों एवं कर्मचारियों के संग।

[2]ये कहने वाले कौन थे? कुछ के निकट ईमानवाले ही थे जो उसके धन तथा अलंकार के प्रदर्शन से प्रभावित हो गये थे तथा कुछ के निकट काफ़िर थे।

[3]अर्थात जिनके पास धर्म का ज्ञान था तथा दुनिया एवं उसके प्रदर्शन की मूल वास्तविकता से परिचित थे, उन्होंने कहा कि यह क्या है, कुछ भी नहीं। अल्लाह ने ईमानवालों तथा सत्कर्मियों के लिए जो बदला तथा पुण्य रखा है, वह इससे कहीं अधिक उत्तम है। जैसे हदीस क़ुदसी में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "मैंने अपने पुण्यकर्मी भक्तों के लिए ऐसी-ऐसी वस्तुयें तैयार कर रखी हैं जिन्हें किसी आंख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना तथा न किसी के विचार में आया।" (अल-बुख़ारी किताबुत तौहीद, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्न: मंजिलतन)

[4]अर्थात يُلَقّٰىهَا में هَا सर्वनाम कथन की ओर फिरता है तथा यह कथन अल्लाह का है। यदि उसे ज्ञानियों ही के कथनापूरक मान लिया जाये तो هَا का संकेत स्वर्ग की ओर होगा अर्थात स्वर्ग के अधिकारी वे धैर्यवान ही होंगे जो सांसारिक मायामोह से अलग तथा आख़िरत के जीवन में रूचि रखने वाले होंगे।

[5]अर्थात क़ारून को उसके घमण्ड के कारण उसके महल तथा कोष सहित धरती में धंसा दिया। हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "एक व्यक्ति

कोई गिरोह उसकी सहायता के लिए तैयार नहीं हुआ न वह स्वयं अपने को बचाने वालो में से हो सका।

يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾

(८२) तथा जो लोग कल तक उसके पद तक पहुँचने की आशा कर रहे थे, वे आज कहने लगे कि क्या तुम नहीं देखते[1] कि अल्लाह (तआला) ही अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका अधिक कर देता है तथा कम भी, यदि अल्लाह (तआला) हम पर उपकार न करता तो हमें भी धंसा देता, [2] क्या देखते नहीं हो कि कृतघ्नों को कभी सफलता नहीं प्राप्त होती।[3]

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ
بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنْ
مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا
وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾

(८३) परलोक का यह (रमणीय) घर हम उन्हीं के लिए निर्धारित कर देते हैं जो धरती पर अंहकार एवं गर्व नहीं करते, न उपद्रव

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا
لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا

अपनी लुंगी (धोती) धरती पर लटकाये जा रहा था (अल्लाह को उसका यह अहंकार पसन्द नहीं आया) तथा उसे धरती में धँसा दिया गया। वह क़ियामत तक धरती में धँसता चला जायेगा।" (अल-बुख़ारी किताबुल लिबास)

[1]مكان से तात्पर्य वह साँसारिक मान-मर्यादा है जो संसार में किसी को सामयिक रूप से मिलता है, जैसे क़ारून को मिला था। अर्थ यह है कि क़ारून का सा धन तथा वैभव के अभिलाषियों ने जब क़ारून का शिक्षाप्रद परिणाम देख लिया तो कहाकि धन-सम्पत्ति इस बात का प्रमाण नहीं है कि अल्लाह तआला उस धनवान से प्रसन्न भी है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह तआला किसी को धन अधिक दे देता है तथा किसी को कम। इसका सम्वन्ध उसके इच्छा, विवेक तथा नीति से है, जिसे उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। धन की बाहुल्यता उस की प्रसन्नता का तथा धन की कमी उसकी अप्रसन्नता का प्रमाण नहीं है, न यह श्रेष्ठता का माप ही है।

[2]अर्थात हम भी उस दुष्परिणाम को पहुँचते जिस को क़ारून पहुँचा।

[3]अर्थात क़ारून ने धन पाकर कृतज्ञता के बजाय कृतघ्नता तथा अवज्ञा का मार्ग अपनाया तो देख लो उसका दुष्परिणाम भी कैसा हुआ ?

فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾

की इच्छा रखते हैं। और परहेज़गारों (संयमियों) के लिए अत्यन्त उत्तम प्रतिफल है।[1]

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

(८४) जो व्यक्ति पुण्य लायेगा उसे उससे उत्तम मिलेगा[2] तथा जो बुराई लेकर आयेगा तो ऐसे कुकर्म करने वालों को उनके उसी कर्म का बदला प्रदान किया जायेगा जो वे करते थे।[3]

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي

(८५) जिस (अल्लाह) ने आप पर क़ुरआन अवतरित किया है[4] वह आप को पुन: प्रथम स्थान पर लाने वाला है।[5] कह दीजिए कि

---

[1] عُلُوّ का अर्थ है अत्याचार तथा अति, लोगों से अपने को श्रेष्ठ तथा उच्च समझना तथा कहलवाना, गर्व, अहंकार तथा घमण्ड करना तथा فساد का अर्थ है अनर्थ लोगों का माल हथियाना अथवा अवज्ञा करना कि इन दो बातों से धरती में उपद्रव फैलता है। फ़रमाया कि अल्लाह से भय खाने वालों के कर्म तथा आचरण इन त्रुटियों एवं बुराईयों से शुद्ध होते हैं तथा अभिमान के बजाय उनके अन्दर विनम्रता, अवहेलना के बजाय आज्ञाकारिता होती है तथा आख़िरत का घर (स्वर्ग) तथा सुपरिणाम उन्हीं के पक्ष में आयेगा।

[2]अर्थात कम से कम प्रत्येक भलाई का बदला दस गुना अवश्य मिलेगा, तथा जिसके लिए अल्लाह चाहेगा इससे भी अधिक और अधिक प्रदान करेगा।

[3]अर्थात भलाई का बदला तो बढ़ा-चढ़ाकर दिया जायेगा परन्तु बुराई का बदला बुराई के समान ही मिलेगा। अर्थात भलाई के बदले में अल्लाह की दया तथा कृपा का तथा बुराई के वदले मे उसके न्याय का प्रदर्शन होगा।

[4]अर्थात इसका पाठ तथा इसका प्रचार-प्रसार आप का कर्तव्य है।

[5]अर्थात आपकी जन्मस्थली मक्का, जहाँ से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को निकलने के लिए वाध्य कर दिया गया था। आदरणीय इब्ने अब्बास से सहीह बुख़ारी में इसकी यही व्याख्या प्राप्त होती है। अत: हिजरत के आठ वर्ष पश्चात अल्लाह का यह वचन पूरा हुआ तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ८ हिजरी में विजयी रूप से मक्का नगर में प्रवेश किया। कुछ ने معاد से तात्पर्य क़ियामत लिया है। अर्थात क़यामत के दिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपनी ओर लौटायेगा तथा रिसालत के प्रचार के विषय में पूछेगा।

اَعۡلَمُ مَنۡ جَآءَ بِالۡهُدٰى وَمَنۡ هُوَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۸۵﴾

मेरा प्रभु उसे भी भली-भाँति जानता है जो मार्गदर्शन लाया है तथा उसे भी जो खुले भटकावे में है ।[1]

وَمَا كُنۡتَ تَرۡجُوۡۤا اَنۡ يُّلۡقٰٓى اِلَيۡكَ الۡكِتٰبُ اِلَّا رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوۡنَنَّ ظَهِيۡرًا لِّلۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۸۶﴾

(८६) तथा आपने तो कभी यह सोचा भी न था कि आपकी ओर किताब अवतरित की जायेगी[2] परन्तु यह आपके प्रभु की कृपा से (अवतरित हुआ) ।[3] अब आपको कदापि काफ़िरों का सहायक न होना चाहिए ।[4]

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعۡدَ اِذۡ اُنۡزِلَتۡ اِلَيۡكَ وَادۡعُ اِلٰى رَبِّكَ

(८७) (ध्यान रहे कि) ये काफ़िर आपको अल्लाह तआला की आयतों के प्रचार करने से रोक न दें[5] उसके पश्चात कि यह आप

---

[1]यह मूर्तिपूजकों के उस उत्तर में है जो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके पैतृक एवं प्रचलित धर्म से विमुख होने के कारण पथभ्रष्ट समझते थे । फ़रमाया, "मेरा प्रभु भली-भाँति जानता है कि पथभ्रष्ट मैं हूँ जो अल्लाह की ओर से प्रकाश लेकर आया हूँ अथवा तुम हो जो अल्लाह की ओर से आये हुए प्रकाश को स्वीकार नहीं कर रहे हो ?"

[2]अर्थात नबूअत से पूर्व आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विचार में भी नहीं था कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रिसालत के लिए चुना जायेगा तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अल्लाह की किताब अवतरित होगी ।

[3]अर्थात यह नबूअत तथा किताब से सुशोभित करना अल्लाह की विशेष कृपा का फल है, जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर हुई । इससे ज्ञात हुआ कि नबूअत कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे परिश्रम, प्रयत्न तथा प्रयास से प्राप्त किया जा सकता रहा हो । अपितु यह सवर्था अल्लाह की एक वरदान थी । अल्लाह तआला जिसे चाहता रहा अपने भक्तों में से नबूअत तथा रिसालत से सुशोभित करता रहा । यहाँ तक कि परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस स्वर्णिम ऋंखला की अंतिम कड़ी घोषित कर इसे समाप्त कर दिया गया ।

[4]अब इस अनुग्रह तथा अल्लाह की कृपा की कृतज्ञता आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस प्रकार व्यक्त करें कि काफ़िरों की सहायता तथा पक्षधर न बनें ।

[5]अर्थात उन काफ़िरों की बातें, उनकी यातनायें तथा उनकी ओर से धर्म प्रचार-प्रसार में विघ्न करना आपको क़ुरआन के पाठ तथा उसके प्रचार-प्रसार से न रोक दें । बल्कि

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾

की ओर अवतरित की गयीं, तो अपने प्रभु की ओर बुलाते रहें तथा शिर्क करने वालों (मिश्रण वादियों) में से न हों।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा अल्लाह (तआला) के साथ किसी अन्य देवता को न पुकारना,[1] सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई अन्य पूजने योग्य नहीं, प्रत्येक वस्तु नाशवान है परन्तु उसी का मुख[2] उसी का शासन है[3] तथा तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे।[4]

आप (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूरी एकाग्रता से प्रभु की ओर बुलाने का कार्य करते रहें।

[1]अर्थात किसी अन्य की इबादत न करना, न प्रार्थना के द्वारा, न भोग-प्रसाद से, न बलि के द्वारा कि ये सभी इबादतें हैं, जो केवल एक अल्लाह के लिए विशेष हैं। क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की इबादत को पुकारना कहा गया है, जिसका उद्देश्य इसी बिन्दु को स्पष्ट करना है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को माध्यमों से परे मानकर पुकारना, उनसे सहायता माँगना, विनय तथा प्राथनायें करना यह उनकी इबादत ही है जिससे मनुष्य मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) बन जाता है।

[2]وَجْهَهُ (उसका मुख) से तात्पर्य अल्लाह की ज़ात है। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु नश्वर है।

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۞ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ﴾

"धरती पर जो हैं सब समाप्त होने वाले हैं। मात्र तेरे प्रभु का मुख जो महानता एवं सम्मान वाला है, शेष रह जायेगा।" (*सूर: अर्रहमान*-२६,२७)

[3]अर्थात उसी का निर्णय, जो वह चाहे, लागू होता है तथा उसी का आदेश, जिसकी वह इच्छा करे, चलता है।

[4]ताकि वह सत्कर्मियों को उनकी भलाई का बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्म का दण्ड दे।

सूरतुल अनकबूत-२९

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ

सूर: अनक़बूत मक्का में अवतरित हुई तथा इसकी उनहत्तर आयतें तथा सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अति दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

الٓمّٓ ۚ﴿١﴾

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾

(२) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उनके केवल इस कथन पर कि हम ईमान लाये हैं वे बिना परीक्षा लिये हुए ही छोड़ दिये जायेंगे ?[1]

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا

(३) उनसे पूर्व के लोगों को भी हमने भली-भाँति जाँचा,[2] निःसंदेह अल्लाह (तआला) उन्हें

सूरः अल-अनक़बूत की व्याख्या :

[1]अर्थात यह विचार कि केवल मुख से ईमान ले आने के पश्चात बिना परीक्षा लिए उन्हें छोड़ दिया जायेगा, सही नहीं। बल्कि उन्हें प्राण एवं धन के दुख तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा जाँचा परखा जायेगा ताकि खरे खोटे का, सत्य असत्य का, ईमानवाले तथा द्वयवादी का पता चल जाये।

[2]अर्थात यह अल्लाह का नियम है जो आदि से चला आ रहा है। इसलिए वह इस सम्प्रदाय के ईमानवालों की भी परीक्षा लेगा जिस प्रकार पूर्व के समुदायों की परीक्षा ली गयी। इन आयतों के अवतरित होने की विशेषता के कथन में आता है कि सहाबा केराम (नबी के सहचर) ने उस अत्याचार तथा क्रूरता की शिकायत की जिस का लक्ष्य मक्का के काफ़िरों की ओर से वे बने हुए थे तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआ करने की प्रार्थना की ताकि अल्लाह उनकी सहायता करे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह आतंक तथा यातना तो ईमानवालों के इतिहास का भाग है। तुम से पूर्व कुछ ईमानवालों का यह हाल किया गया कि उन्हें एक गड्ढा खोदकर उसमें खड़ा करके उनके सिरों पर आरा चला दिया गया जिससे उनके शरीर दो भागों में विभाजित हो गये इसी प्रकार लोहे की कंघियाँ उनके माँस में अस्थियों तक फेरी गयीं परन्तु ये यातनायें उन्हें सत्य धर्म से विचलित करने में सफल नहीं हुई। (सहीह बुख़ारी किताब अहादिसिल अंबिया) आदरणीय अम्मार, उनकी माता आदरणीया सुमय्या तथा पिता आदरणीय यासिर, आदरणीय सुहैब, आदरणीय बिलाल तथा आदरणीय मिक़दाद

وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ③

भी जान लेगा जो सत्य कहते हैं तथा उन्हें भी जान लेगा, जो झूठे हैं।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ④

(४) क्या जो लोग कुकर्म कर रहे हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि वे हमारे नियन्त्रण से बाहर हो जायेंगे ?[1] यह लोग कैसा बुरा विचार कर रहे हैं।[2]

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ⑤

(५) जिसे अल्लाह से मिलने की आशा हो, तो अल्लाह का निर्धारित किया हुआ समय निश्चित आने वाला है,[3] वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।[4]

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ

(६) तथा प्रत्येक प्रयत्न करने वाला अपने ही भले के लिए प्रयत्न करता है। निःसंदेह

आदि (رضي الله عنهم) पर इस्लाम के प्रारम्भिक काल में जो अत्याचार तथा कष्ट के पहाड़ तोड़े गये, वे इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित हैं। ये घटनायें ही इन आयतों के अवतरित होने का कारण बनी। फिर भी शब्दों की सामान्यता के आधार पर क़ियामत तक के ईमानवाले इसमें सम्मिलित हैं।

[1]अर्थात हम से भाग जायेंगे तथा हमारी पकड़ में न आ सकेंगे, ऐसा नहीं होगा।

[2]अर्थात अल्लाह के विषय में ये किस भ्रम में लिप्त हैं, जबकि वह सभी वस्तुओं पर सामर्थ्यवान है तथा प्रत्येक बात से अवगत भी। फिर उसकी अवहेलना करके उसकी पकड़ तथा यातना से किस प्रकार भाग सकेंगे ?

[3]अर्थात जिसे आख़िरत पर विश्वास है तथा वह बदले एवं पुण्य की आशा से सत्कर्म करता है अल्लाह तआला उसकी आशायें पूर्ण करेगा तथा उसे उसके कर्मों का पूरा बदला प्रदान करेगा, क्योंकि क़ियामत निश्चित रूप से होकर रहेगी तथा अल्लाह के न्यायालय की स्थापना अवश्य होगी।

[4]वह भक्तों की बातों एवं प्रार्थनाओं का सुनने वाला तथा उनके गुप्त तथा प्रकट सभी कर्मों का जानने वाला है। उसके अनुसार वह फल तथा दण्ड भी अवश्य देगा।

إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَٰلَمِينَ ⑥

अल्लाह (तआला) सभी जगत वालों से निस्पृह है।[1]

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑦

(७) तथा जिन लोगों ने विश्वास किया तथा (सुन्नत के अनुरूप) अच्छे कर्म किये, हम उनके सभी पापों को उनसे दूर कर देंगे तथा उनके सत्कर्मों का उत्तम प्रतिफल देंगे।[2]

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ

(८) हमने प्रत्येक मनुष्य को अपने माता-पिता से सद्व्यवहार करने की शिक्षा दी है,[3]

---

[1]इसका अर्थ वही है जो ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ﴾ (सूर: जासिया-१५) का है, अर्थात 'जो सत्कर्म करेगा उसका लाभ उसी को होगा।' वरन् अल्लाह तआला को तो भक्तों के कर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है । यदि सम्पूर्ण धरती के लोग अल्लाह से भय खाने वाले (संयमी) हो जायें तो उसके राज्य में शक्ति एवं विस्तार न होगा तथा सभी अवहेलना करने वाले हो जायें तो उसके राज्य में तनिक भी कमी नहीं आयेगी। शब्दों के आधार पर इनमें काफ़िरों से धर्मयुद्ध करने का भी आदेश सम्मिलित है कि वह भी एक प्रकार का सत्कर्म ही है।

[2]अर्थात इस बात के उपरान्त कि अल्लाह तआला सम्पूर्ण सृष्टि से निस्पृह है, वह केवल अपनी कृपा तथा दया से ईमानवालों को उनके कर्मानुसार बदला प्रदान करेगा तथा एक-एक सत्कर्म पर कई-कई गुना प्रतिकार एवं पुण्य प्रदान करेगा।।

[3]क़ुरआन करीम के विभिन्न स्थानों पर अल्लाह तआला ने अपनी एकता तथा इबादत का आदेश देने के साथ ही साथ माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करने पर बल दिया है, जिससे इस बात का स्पष्टीकरण होता है कि एकेश्वरवाद की माँगों को उचित रूप से वही समझ सकता तथा उन्हें निभा सकता है जो माता-पिता के आज्ञा पालन तथा सेवा माँगों को समझता है तथा निभाता है। जो व्यक्ति यह बात समझने में असमर्थ है कि दुनिया में उसका अस्तित्व माता-पिता के संयोग का परिणाम तथा उसका पालन-पोषण उनकी असीमित कृपा एवं प्रेम का फल है इसलिए मुझे उनकी सेवा में कोई कमी तथा आज्ञा पालन में उद्दण्ता नहीं करनी चाहिए, वह अवश्य सृष्टि के स्रष्टा को समझने तथा उसके एकेश्वरवाद तथा इबादत के नियमों को निभाने में भी असमर्थ रहेगा। इसीलिए हदीसों में भी माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करने पर बड़ा बल दिया गया है एक हदीस में माता-पिता की प्रसन्नता तथा उनकी अप्रसन्नता को प्रभु की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता का कारण बताया गया है।

حُسْنًا ۖ وَإِن جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑧

परन्तु यदि वे यह प्रयत्न करें कि तुम मेरे साथ उसे सम्मिलित कर लो जिसका तुमको ज्ञान नहीं तो उनका कहना न मानो,[1] तुम सबको लौटकर मेरी ही ओर आना है, फिर मैं प्रत्येक उस बात से जो तुम करते थे, तुम्हें अवगत कराऊँगा।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ⑨

(९) तथा जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया तथा पुण्य के कार्य किये, उन्हें हम अपने पुण्यात्मा भक्तों में सम्मिलित कर लेंगे।[2]

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِن جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ

(१०) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (मुख से) कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं परन्तु जब अल्लाह के मार्ग में कोई दुख आ पड़ता है तो लोगों के कष्ट देने को अल्लाह तआला की यातना के समान बना लेते हैं,[3] परन्तु यदि

---

[1]अर्थात माता-पिता यदि शिर्क का आदेश दें (तथा उसी में अन्य पापों का आदेश भी सम्मिलित है) तथा उसके लिए विशेष प्रयत्न भी करें (जैसाकि مجاهدة के शब्द से स्पष्ट है) तो उनके आदेशों का पालन नहीं करना चाहिए, क्योंकि «لاَ طَاعَةَ لأَحَدٍ فِي مَعْصِيَةِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى» (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ ६६ तथा अल-सहीह: लिल-अलबानी संख्या १७९) "अल्लाह की अवहेलना में किसी की आज्ञा का पालन नहीं।" इस आयत के अवतरित होने की विशेषता में आदरणीय सअ्द बिन अबी वक़्क़ास की घटना आती है कि उनके मुसलमान होने पर उनकी माता ने कहा कि मैं भोजन करूँगी न पानी पिऊँगी यहाँ तक कि मर जाऊँगी अथवा तू मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत को अस्वीकार कर दे अन्त में यह अपनी माता का मुख बलपूर्वक खोल कर खिलाते, जिस पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह मुस्लिम, तिर्मिज़ी सूर: अल-अनक़बूत की व्याख्या)

[2]अर्थात यदि किसी के माता-पिता मूर्तिपूजक होंगे तो ईमानवाला पुत्र पुण्य करने वालों के साथ होगा, माता-पिता के साथ नहीं। इसलिए चाहे माता-पिता दुनिया में उसके अत्यन्त निकट होंगे परन्तु उसका धार्मिक प्रेम ईमान वालों के ही साथ था, जिसके कारण المرء مع من أحبَّ के अधीन वह सत्कर्मियों के समूह में होगा।

[3]इसमें अवसरवादी अथवा क्षीण ईमानवालों की अवस्था का वर्णन किया है कि ईमान के कारण उन्हें कष्ट पहुँचता है, तो अल्लाह की यातना की भाँति वह उनके लिए असहनीय

إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ⑩

अल्लाह की सहायता आ जाये[1] तो पुकार उठते हैं कि हम तो तुम्हारे साथी ही हैं,[2] क्या सभी संसार (व्यक्तियों) के दिलों में जो कुछ है उससे अल्लाह तआला परिचित नहीं है ?[3]

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ⑪

(११) तथा जो लोग ईमान लाये अल्लाह उन्हें भी जानकर (प्रकट करके) रहेगा तथा द्वयवादियों को भी जानकर (प्रकट करके) रहेगा ।[4]

होता है । परिणाम स्वरूप वे ईमान से मुख फेर लेते हैं तथा सर्वधारण का धर्म धारण कर लेते हैं ।

[1]अर्थात मुसलमानों को विजय तथा प्रभुत्व प्राप्त हो जाये ।

[2]अर्थात तुम्हारे धार्मिक भाई हैं । यह वही विषय है जो अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णित किया गया है कि वे लोग तुम्हें देखते रहते हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे, तथा यदि परिस्थितियाँ काफ़िरों के पक्ष में होती हैं तो (काफ़िरों से जाकर कहते हैं) कि क्या हमने तुम को घेर नहीं लिया था तथा मुसलमानों से तुम्हें नहीं बचाया था । (*सूर: अल-निसा*-१४१)

[3]अर्थात क्या अल्लाह उन बातों को नहीं जानता जो तुम्हारे दिलों में हैं तथा तुम्हारे अन्त:करणों में छिपी हैं यद्यपि मुख से मुसलमानों का साथी होने की बातें करते हो ।

[4]इसका अर्थ है कि अल्लाह तआला सुख तथा कष्ट देकर परीक्षा लेगा ताकि अवसरवादियों एवं ईमानवालों में अन्तर स्पष्ट हो जाये । जो दोनों परिस्थितियों में अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा, वह ईमान वाला है तथा जो केवल प्रसन्न्ता तथा सुख में आज्ञापालन करेगा तो इसका अर्थ यह है कि वह केवल अपनी स्वार्थ की सिद्धि का अधीन है, अल्लाह का नहीं । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴾

"हम तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेंगे ताकि हम जान लें कि तुम में से सहनशील धर्मयोद्धा एवं धैर्यवान कौन है तथा तुम्हारी अन्य परिस्थितियाँ भी जाँचेंगे"। (*सूर: मोहम्मद*-३१)

ओहुद के युद्ध के पश्चात जिसमें मुसलमान जाँच तथा परीक्षा की भट्टी से गुज़ारे गये थे, फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا هُم بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُم مِّن شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा काफ़िरों ने ईमानवालों से कहा कि तुम हमारे मार्ग का अनुसरण करो तुम्हारे पाप हम उठा लेंगे,[1] जबकि वह उनके पापों में से कुछ भी नहीं उठाने वाले, यह तो केवल झूठे हैं।[2]

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

(१३) हाँ, ये अपने बोझ ढो लेंगे तथा अपने बोझों के साथ अन्य बोझ भी, [3] तथा जो कुछ

﴿مَّا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ﴾

"नहीं है अल्लाह तआला कि छोड़ दे ईमान वालों को उस अवस्था में जिसमें तुम हो, यहाँ तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग कर दे।" (*सूर: आले-इमरान*-१७९)

[1]अर्थात तुम उसी पूर्वजों के धर्म की ओर लौट जाओ जिस पर हम अभी तक दृढ़ हैं, इसलिए कि वही धर्म सत्य है। यदि इस प्रचलित धर्म के अनुसार कर्म करने से तुम पापी होगे तो हम उसके उत्तरदायी हैं, वह बोझ हम अपनी गर्दनों पर उठायेंगे।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ये झूठे हैं। क़ियामत का दिन तो ऐसा होगा कि वहाँ कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा। ﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ﴾ वहाँ तो एक मित्र दूसरे मित्र को नहीं पूछेगा चाहे उनके मध्य अत्यन्त घनिष्ठता ही क्यों न हो।

﴿وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا﴾

"यहाँ तक कि सगे-सम्बन्धी भी एक-दूसरे का बोझ नहीं उठायेंगे।" (*सूर: अल-मआरिज*-१०)

﴿وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ﴾ (*सूर: फ़ातिर*-१८)

[3]अर्थात यह कुफ़्र के अगुवा तथा अधर्म के प्रचारक अपना ही बोझ नहीं उठायेंगे, अपितु उन लोगों के पापों का बोझ भी उन पर होगा जो उनके प्रयत्नों के कारण पथभ्रष्ट हुए थे। यह विषय *सूर: अल-नहल*-२५ में भी गुज़र चुका है। हदीस में है, जो मार्गदर्शन की ओर आमन्त्रित करता है, उसके लिए अपने पुण्यों के अतिरिक्त उन लोगों के पुण्य का भी बदला प्राप्त होगा जो उसके कारण क़ियामत तक सन्मार्ग का अनुसरण करेंगे, बिना इसके कि उनके प्रतिकार में कोई कमी हो, तथा जो पथभ्रष्टता का प्रचारक होगा, उसके लिए अपने पापों के अतिरिक्त उन लोगों के पापों का भी बोझ होगा जो क़ियामत तक उसके कारण पथभ्रष्टता का मार्ग अपनाने वाले होंगे, बिना इसके कि उनके पापों में कमी हो। (अबू दाऊद किताबुल सुन्नः बाबु लुज़ुमिस सुन्नः, इब्ने माजा अल-मोकद्दमः बाबु मन् सन्न सुन्नतन हसनतन औ सय्येअतन) इसी नियम के आधार पर क़ियामत तक

عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

झूठ गढ़ रहे हैं उन सब के लिए उनसे पूछताछ होगी।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनके समुदाय की ओर भेजा, वे उनके मध्य साढ़े नौ सौ वर्ष तक रहे।[1] फिर तो उन्हें तूफ़ान ने धर पकड़ा तथा वे थे भी अत्याचारी।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

(१५) फिर हमने उन्हें तथा नाव वालों को मुक्ति दी तथा हमने इस घटना को सम्पूर्ण संसार के लिये शिक्षा का संकेत बना दिया।

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

(१६) तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने भी अपने समुदाय से कहा कि अल्लाह (तआला) की इबादत करो तथा उससे डरते रहो, यदि तुम में बुद्धि है तो यही तुम्हारे लिए उत्तम है।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ

(१७) तुम तो अल्लाह तआला के अतिरिक्त मूर्तियों की पूजा पाठ कर रहे हो, तथा झूठी बातें मन से गढ़ लेते हो।[2] (सुनो!) जिन-

---

अत्याचार से हत्या किये जाने वालों के रक्त का पाप आदम के प्रथम पुत्र (क़ाबील) पर होगा, इसलिए कि सर्वप्रथम उसी ने अनर्थ हत्या की थी। (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ ३८३ वक़्द अख़रजहुल जमाअ: सवा अबी दाऊद मिनतुरुक)

[1]क़ुरआन के शब्दों से ज्ञात होता है कि यह उनके आमन्त्रण तथा प्रचार-प्रसार की आयु है। उनकी पूरी आयु कितनी थी, इसको स्पष्ट नहीं किया गया। कुछ कहते हैं कि ४० वर्ष नबूअत से पूर्व तथा साठ वर्ष तूफ़ान के पश्चात इसमें सम्मिलित कर लिये जायें। अन्य भी कई कथन हैं। والله أعلم بالصواب

[2] أوثان बहुवचन है وَثَن का, जिस प्रकार أصنام बहुवचन है صَنَم का। दोनों का अर्थ मूर्ति है। कुछ कहते हैं, صنم (सनम) सोने, चाँदी, पीतल तथा पत्थर की मूर्ति को तथा وثن मूर्ति को भी तथा चूने के पत्थर आदि के बने हुए थानों को भी कहते हैं। تَخلُقُونَ إِفكًا का एक अर्थ है تَكذِبُونَ كَذِبًا जैसाकि मूल पंक्ति के अनुवाद से स्पष्ट है। दूसरा अर्थ है تعملونها و تَنحتونها لِلإفك झूठे उद्देश्य के लिए उन्हें निर्मित करते तथा गढ़ते हो। भावार्थ के अनुसार दोनों ही अर्थ ठीक हैं। अर्थात अल्लाह को छोड़कर तुम जिन मूर्तियों की पूजा करते हो,

تَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَمۡلِكُونَ لَكُمۡ رِزۡقٗا فَٱبۡتَغُواْ عِندَ ٱللَّهِ ٱلرِّزۡقَ وَٱعۡبُدُوهُ وَٱشۡكُرُواْ لَهُۥٓۖ إِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ ۝١٧

जिनकी तुम अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पूजा-पाठ कर रहे हो, वे तो तुम्हारी जीविका के स्वामी नहीं, अत: तुम्हें चाहिए कि अल्लाह तआला से ही जीविका माँगो तथा उसी की इबादत करो एवं उसी की कृतज्ञता व्यक्त करो,[1] तथा उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे ।[2]

وَإِن تُكَذِّبُواْ فَقَدۡ كَذَّبَ أُمَمٞ مِّن قَبۡلِكُمۡۖ وَمَا عَلَى ٱلرَّسُولِ إِلَّا ٱلۡبَلَٰغُ ٱلۡمُبِينُ ۝١٨

(१८) तथा यदि तुम झुठलाओ तो तुम से पूर्व के समुदायों ने भी झुठलाया है,[3] और रसूल का कर्तव्य तो मात्र साफ-साफ प्रकार से पहुँचा देना ही है ।[4]

वे पत्थर की बनी हुई हैं, वे सुन भी नहीं सकती हैं न देख सकती हैं, न हानि पहुँचा सकती हैं न लाभ। अपने मन से ही तुमने गढ़ लिया है, कोई प्रमाण तो उन की सत्यता का तुम्हारे पास नहीं है । अथवा ये मूर्तियां तो वे हैं जिन्हें तुम अपने हाथों से गढ़ते हो तथा जब उनमें विशेष रूप तथा आकार आ जाता है तो तुम समझते हो कि इनमें ईश्वरीय अधिकार आ गये हैं तथा उनसे तुम आशायें बाँध कर उन्हें कष्ट निवारक तथा संकटमोचन बताते हो।

[1]अर्थात जब यह मूर्तियां तुम्हारी जीविका उपार्जन के साधनों में से किसी की भी स्वामी नहीं हैं, न वर्षा कर सकती हैं, न धरती पर वृक्ष उगा सकती हैं तथा न सूर्य का ताप प्रदान कर सकती हैं तथा न तुम्हें वह शक्ति प्रदान कर सकती हैं कि जिन्हें तुम प्रयोग करके प्रकृति की इन वस्तुओं से लाभान्वित होते हो, तो फिर तुम जीविका अल्लाह ही से माँगो, उसी की इबादत तथा उसी की कृतज्ञता व्यक्त करो।

[2]अर्थात मर कर तथा पुन: जीवित होकर जब उसी की ओर लौटना है, उसी के सदन में उपस्थित होना है तो उसे छोड़कर तुम अन्यों के द्वार पर अपने मस्तक क्यों झुकाते हो ? उसके अतिरिक्त अन्यों की इबादत क्यों करते हो दूसरों को आवश्यकता पूर्ति करने वाला तथा कष्ट निवारक क्यों समझते हो ?

[3]यह आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भी कथन हो सकता है, जो उन्होंने अपने समुदाय से कहा था। अथवा अल्लाह तआला का कथन है, जिसमें मक्कावासियों को सम्बोधन है तथा इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को साँत्वना दी जा रही है कि यदि मक्का के काफ़िर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठला रहे हैं तो इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है । पैग़म्बरों के साथ यही होता चला आया है। पूर्व के सम्प्रदाय भी रसूल को झुठलाते तथा उसका परिणाम भी विनाश एवं विध्वंस के रूप में भुगतते रहे हैं।

[4]इसलिए आप भी प्रचार-प्रसार का कार्य करते रहें। इससे कोई मार्ग पाता है अथवा नहीं,

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥٓ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

(१९) क्या उन्होंने नहीं देखा कि सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार अल्लाह ने की फिर अल्लाह उसको लौटायेगा,[1] यह तो अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।[2]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

(२०) कह दीजिए कि धरती पर चल-फिर कर देखो तो [3] कि किस प्रकार से अल्लाह (तआला) ने प्रथमतः सृष्टि की उत्पत्ति की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई उत्पत्ति करेगा। अल्लाह तआला हर वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

(२१) जिसे चाहे यातना दे, जिस पर चाहे दया करे, सब उसी की ओर लौटाये जाओगे।[4]

इसके उत्तरदायी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नहीं हैं, न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा ही जायेगा, क्योंकि सन्मार्ग प्रदान करना अथवा न करना यह अल्लाह के अधिकार में है, जो अपने नियमानुसार जिसमें प्रकाश प्राप्त करने की सच्ची माँग देखता है, उसको मार्गदर्शन प्रदान करता है, दूसरों को पथभ्रष्टता के अंधकार में भटकता हुआ छोड़ देता है।

[1]एकेश्वरवाद तथा रिसालत के पक्ष को सिद्ध करने के पश्चात यहाँ से आख़िरत के विषय में वर्णन किया जा रहा है, जिसको काफ़िर अस्वीकार करते थे। फ़रमाया कि प्रथम बार जन्म देने वाला भी वही है जब तुम्हारा मूल से अस्तित्व ही नहीं था, फिर तुम देखने, सुनने तथा समझने वाले बन गये। फिर जब मरकर मिट्टी में मिल जाओगे, देखने में तुम्हारा नाम व चिन्ह तक नहीं रहेगा, अल्लाह तआला तुम्हें पुनः जीवित करेगा।

[2]अर्थात यह बात चाहे तुम्हें कितनी ही कठिन लगे अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

[3]अर्थात विश्व में फैली हुई अल्लाह की निशानियाँ देखो धरती पर ध्यान दो, किस प्रकार उसे बिछाया, उसमें पर्वत, घाटियाँ, नदियाँ तथा समुद्र बनाये। उसी से विभिन्न प्रकार की जीविका व फल उत्पन्न किये। क्या यह सब वस्तुयें इस बात का प्रमाण नहीं है कि उन्हें उत्पन्न किया गया है तथा उनका कोई बनाने वाला है ?

[4]अर्थात वही मूल स्वामी तथा अधिकार वाला है, उससे कोई पूछ नहीं सकता। फिर भी उसकी यातना अथवा कृपा यों ही अलक्ष्य नहीं होगी अपितु उन नियमों के आधार पर होगी जो उसने उसके लिए निर्धारित कर रखे हैं।

(२२) तुम न तो धरती पर अल्लाह (तआला) को विवश कर सकते हो न आकाश में, अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक है न सहयोगी।

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

(२३) जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों तथा उसकी मुलाकात को झुठलाते हैं, वे मेरी दया से निराश हो जायें[1] तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

---

[1]अल्लाह तआला की दया दुनिया में जनसामान्य के लिए है, जिससे काफ़िर तथा ईमानवाले, छली तथा निष्छली, अच्छे तथा बुरे सभी समान रूप से लाभान्वित हो रहे हैं। अल्लाह तआला सभी को दुनिया के सुख तथा धन-धान्य प्रदान कर रहा है। यह अल्लाह तआला की दया का वह विस्तार है जिसे अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾

"मेरी दया ने प्रत्येक वस्तु को घेर लिया है।" (*सूर: अल-आराफ़-१५६*)

परन्तु आख़िरत चूँकि बदला देने का स्थान है, मनुष्य ने दुनिया की खेती में जो कुछ बोया होगा उसकी फसल उसे वहाँ काटनी होगी, जैसे कर्म किये होंगे उसका फल उसे वहाँ मिलेगा। अल्लाह के दरबार में निष्पक्ष निर्णय होंगे। दुनिया की भाँति यदि आख़िरत में भी बुरे-भले के साथ समान व्यवहार हुआ तथा ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों ही अल्लाह की दया के पात्र बन जायें तो उससे एक तो अल्लाह तआला के न्याय के गुण पर आक्षेप आता है, दूसरे क़ियामत का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। क़ियामत का दिन अल्लाह ने रखा ही इसी कार्य के लिए है कि वहाँ अच्छों को उनके सत्कर्मों के बदले में स्वर्ग तथा बुरों को उनकी बुराईयों के बदले में नरक दिया जाये। इसीलिए क़ियामत के दिन अल्लाह की दया ईमानवालों के लिए विशेष होगी, जिसे यहाँ भी वर्णन किया गया है कि जो लोग आख़िरत तथा क़ियामत को ही स्वीकार नहीं करते होंगे, वे मेरी दया से निराश होंगे अर्थात उनके भाग में अल्लाह की दया नहीं आयेगी, सूर: अल-आराफ़ में इसको इन शब्दों में वर्णन किया गया है।

﴿فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ﴾

"मैं यह दया (आख़िरत में) उन लोगों के लिए लिखूँगा जो अल्लाह से भय खाने वाले, ज़कात (धर्मदान) अदा करने वाले तथा हमारी आयतों पर ईमान रखने वाले होंगे।" (*सूर: अल-आराफ़-१५६*)

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَىٰهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَآيَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) उनके समुदाय का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि कहने लगे कि इसे मार डालो अथवा इसे जला दो ।[1] अन्ततः अल्लाह (तआला) ने उन्हें आग से बचा लिया,[2] इसमें ईमानवालों के लिए तो बहुत-सी निशानियाँ हैं ।

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَٰنًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَىٰكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّٰصِرِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) (आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) कहा कि तुमने जिन मूर्तियों (देवताओं) की पूजा अल्लाह के अतिरिक्त की है, उन्हें तुमने अपनी साँसारिक मित्रता का कारण बना लिया है ।[3] तुम सब क़ियामत के दिन एक-दूसरे से इंकार करने लगोगे एवं एक-दूसरे को धिक्कारने लगोगे,[4] तथा तुम सबका ठिकाना नरक में होगा तथा तुम्हारी कोई सहायता करने वाला न होगा ।

---

[1]इन आयतों से पूर्व आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कथा का वर्णन हो रहा था । अब पुनः उसका शेष भाग वर्णन किया जा रहा है, मध्य में प्रसांगिक रूप में अल्लाह के एक होने तथा उसके सामर्थ्य एवं शक्ति को वर्णित किया गया है । कुछ कहते हैं कि यह सभी आदरणीय इब्राहीम के भाषण का भाग है, जिसमें उन्होंने एकेश्वरवाद तथा परलोक को सिद्ध करने हेतु तर्क प्रस्तुत किये हैं, जिनका कोई उत्तर जब उनके समुदाय वालों से नहीं बना तो उन्होंने इसका उत्तर अत्याचार तथा आतंकवादी गतिविधियों से दिया, जिसका वर्णन इस आयत में है कि इसका वध करो अथवा जला डालो । अतः उन्होंने आग का एक बहुत बड़ा अलाव तैयार करके आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बड़े-बड़े पत्थर फेंकने वाले यन्त्र के द्वारा उसमें फेंक दिया ।

[2]अर्थात अल्लाह ने उस आग को फुलवारी के रूप में परिवर्तित करके अपने भक्त इब्राहीम को बचा लिया, जैसाकि सूरः अंबिया में गुज़रा ।

[3]अर्थात ये तुम्हारी सामुदायिक मूर्तियाँ हैं जो तुम्हारी एकता तथा आपस की मित्रता का आधार हैं । यदि तुम इनकी पूजा छोड़ दो तो तुम्हारे समाज तथा मित्रता की शृंखला बिखर जायेगी ।

[4]अर्थात क़ियामत के दिन तुम एक-दूसरे का खण्डन तथा मित्रता के बजाय एक-दूसरे को धिक्कारोगे । भक्त, देवता को धिक्कारेगा तथा देवता, भक्त से नफ़रत का प्रदर्शन करेगा ।

فَـَٔامَنَ لَهُۥ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّى مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّىٓ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾

(२६) तो उस (आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर) (आदरणीय) लूत (अलैहिस्सलाम) ईमान लाये,[1] तथा कहने लगे कि मैं अपने प्रभु की ओर स्थानान्तरण करने वाला हूँ ।[2] वह अत्यन्त प्रभावशाली एवं दूरदर्शी है ।

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِى ذُرِّيَّتِهِ ٱلنُّبُوَّةَ وَٱلْكِتَـٰبَ وَءَاتَيْنَـٰهُ أَجْرَهُۥ فِى ٱلدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّـٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा हमने उसे (इब्राहीम को) इसहाक़ तथा याक़ूब प्रदान किये तथा हमने नबूअत तथा किताब उनकी सन्तान में ही कर दी [3] तथा हमने दुनिया में भी उसे पुण्य (प्रतिफल) दिया,[4] तथा परलोक में तो वह सदाचारियों में से हैं ।[5]

---

[1]आदरणीय लूत, आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भाई के पुत्र थे, यह आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाये । तत्पश्चात उनको भी 'सदूम' के क्षेत्र में नबी बनाकर भेजा गया ।

[2]यह आदरणीय इब्राहीम ने कहा तथा कुछ के निकट आदरणीय लूत ने तथा कुछ कहते हैं कि दोनों ने ही हिजरत की । अर्थात जब इब्राहीम तथा उन पर ईमान लाने वाले लूत के लिए अपने क्षेत्र 'कोसा' में जो 'हर्रान' की ओर जाते हुए 'कूफ़े' की एक बस्ती थी, अल्लाह की इबादत करना कठिन हो गया तो वहाँ से हिजरत करके सीरिया के क्षेत्र में चले गये । तीसरे, उनके साथ आदरणीय इब्राहीम की पत्नी 'सारह' थीं ।

[3]अर्थात आदरणीय इसहाक़ से याक़ूब हुए, जिनसे इस्राईल की सन्तान का वंश चला तथा उन्हीं में सारे नबी हुए तथा किताबें आयीं । अन्त में परम आदरणीय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीय इब्राहीम के दूसरे (बड़े) पुत्र आदरणीय इस्माईल के वंश में नबी हुए तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन अवतरित हुआ ।

[4]इस बदले से तात्पर्य सांसारिक जीविका भी है तथा शुभ चर्चा (प्रशंसा) । अर्थात दुनिया में प्रत्येक धर्म के लोग (इसाई, यहूदी आदि यहाँ तक कि मूर्तिपूजक भी) आदरणीय इब्राहीम का आदर तथा सम्मान करते हैं तथा मुसलमान तो हैं ही इब्राहीमी धर्म के अनुयायी, उनके यहाँ वे आदरणीय क्यों न होंगे ?

[5]अर्थात आख़िरत में भी वे उच्च पदों पर आसीन तथा सदाचारी व्यक्तियों के समूह में होंगे । इसी विषय को अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है :

﴿ وَءَاتَيْنَـٰهُ فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّـٰلِحِينَ ﴾

"हमने उसे लोक में भी अच्छाई दी थी तथा नि:सन्देह वह परलोक में भी सदाचारियों में से है ।" (सूर: अल-नहल-१२२)

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा (आदरणीय) लूत (अलैहिस्सलाम) की भी (चर्चा करो) जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम तो उस कुकर्म पर उतर आये हो[1] जिसे तुमसे पूर्व संसार भर में से किसी ने भी नहीं किया।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ

(२९) क्या तुम पुरूषों के पास (कुकर्म के लिए) आते हो[2] तथा मार्ग बन्द करते हो[3] तथा अपनी आम सभाओं में निर्लज्जता का कार्य करते हो ?[4] तो उसके उत्तर में उसके समुदाय

---

[1]उस कुकर्म से तात्पर्य वही पुरूष सम्लिन है जिसको लूत के समुदाय वालों ने सर्वप्रथम किया, जैसाकि क़ुरआन ने स्पष्ट किया है।

[2]अर्थात तुम्हारी कामवासना इस सीमा को पहुँच गयी है कि उसके लिए प्राकृतिक विधियाँ तुम्हारे लिये अपर्याप्त हो गयी हैं तथा तुमने अप्राकृतिक विधि अपना ली है। काम-इच्छा की तृप्ति के लिए प्राकृतिक रूप में अल्लाह तआला ने पत्नियों से संभोग करने की अनुमति दी है। उसे छोड़कर इस कार्य के लिए पुरूषों के गुदा का प्रयोग करना अप्राकृतिक तथा अस्वाभाविक रीति है।

[3]इसका एक अर्थ तो यह किया गया है कि आने जाने वाले यात्रियों, आगन्तुकों तथा गुज़रने वालों को बलपूर्वक रोककर तुम उनसे असभ्य कार्य करते हो, जिससे लोगों को मार्ग से गुज़रना कठिन हो गया है तथा लोग घरों में बैठा रहना ही सुरक्षित समझते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि तुम आने-जाने वालों को लूटते हो तथा हत्या कर देते हो अथवा उद्दण्डता से उन्हें कंकरियाँ मारते हो। तीसरा अर्थ किया गया है कि मार्ग पर ही आभद्र व्यवहार करते हो जिससे वहाँ से गुज़रने वालों को लज्जा होती है। इन सभी परिस्थितियों में मार्ग वन्द हो जाते हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि किसी एक कारण का निर्धारण तो कठिन है, फिर भी वे कोई ऐसा कार्य अवश्य करते थे जिससे क्रियात्मक रूप से मार्ग अवरूद्ध हो जाता था। मार्ग अवरूद्ध करने का एक अर्थ वंश का अवरोध भी किया गया है। अर्थात स्त्रियों के गुप्तांग (योनि) के प्रयोग के बजाय पुरूषों के गुदा का प्रयोग करके तुम अपने वंश को अवरूद्ध करने में लगे हो। (फ़तहुल क़दीर)

[4]यह असभ्यता (निर्लज्जता) क्या थी, इसमें भी विभिन्न कथन हैं, जैसे लोगों को कंकरियाँ मारना, आगन्तुक यात्री का उपहास तथा अवहेलना करना, सभाओं में वायु निकालना, एक-दूसरे के समक्ष बाल संभोग करना, शतरंज आदि प्रकार की बुराईयाँ, रंगीन वस्त्र

إِلَّآ أَن قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾

ने इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा [1] कि बस जा, यदि सच्चा है तो हमारे पास अल्लाह का प्रकोप ले आ।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) (आदरणीय) लूत (अलैहिस्सलाम) ने प्रार्थना की[2] कि प्रभू ! इस उपद्रवी समुदाय पर मेरी सहायता कर।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُو أَهْلِ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते (आदरणीय) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास शुभ सूचना लेकर पहुँचे, कहने लगे कि हम इस बस्ती वालों को नाश करने वाले हैं।[3] नि:सन्देह यहाँ के निवासी पापी हैं।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَن فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ

(३२) (आदरणीय इब्राहीम ने) कहा कि उसमें तो लूत (अलैहिस्सलाम) हैं, फ़रिश्तों ने कहा कि यहाँ जो हैं हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं,[4] लूत तथा उसके परिवार को अतिरिक्त उसकी

धारण करना आदि। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं, "कोई दूर नहीं कि वे ये सारी बुराईयाँ करते रहे हों।"

[1]आदरणीय लूत अलैहिस्सलाम ने जब उन्हें इन निषेधित कर्मों से रोका तो उसके उत्तर में कहा -----।

[2]अर्थात जब आदरणीय लूत अलैहिस्सलाम समुदाय की सुधार से निराश हो गये तो अल्लाह से सहायता की दुआ (प्रार्थना) की ------।

[3]अर्थात आदरणीय लूत की दुआ स्वीकार हुई तथा अल्लाह ने फ़रिश्तों को विनाश करने के लिए भेज दिया। वे फ़रिश्ते पहले आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास गये तथा उन्हें इसहाक़ अलैहिस्सलाम तथा याकूब अलैहिस्सलाम की शुभसूचना दी तथा साथ ही बताया कि हम लूत अलैहिस्सलाम की बस्ती को नाश करने आये हैं।

[4]अर्थात हमें ज्ञात है कि भले एवं ईमान वाले कौन हैं तथा उपद्रवी कौन ?

كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

पत्नी के हम बचा लेंगे, अवश्य वह स्त्री पीछे रह जाने वालों में से है ।[1]

وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۗ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा फिर जब हमारे संदेशवाहक लूत (अलैहिस्सलाम) के पास पहुँचे तो वह उनके कारण दुखी हुए तथा दिल में शोक करने लगे ।[2] संदेशवाहकों ने कहा कि आप भयभीत न हों न दुखी हों हम आपको आपके सम्बन्धियों सहित सुरक्षित कर लेंगे, परन्तु आपकी पत्नी[3] कि वह यातना के लिए शेष रह जाने वालों में से होगी ।

---

[1]अर्थात उन पीछे रह जाने वालों में से जिनको प्रकोप के द्वारा नाश करना है । वह चूँकि ईमानवाली नहीं थी अपितु अपने समुदाय की पक्षधर थी, इसलिए उसे भी नाश कर दिया गया ।

[2] سِيْٓءَ بِهِمْ का अर्थ है "उनके पास ऐसी वस्तु आयी जो उन्हें बुरी लगी तथा उससे भयभीत हो गये ।" इसलिए कि लूत अलैहिस्सलाम ने उन फ़रिश्तों को जो मनुष्य के रूप में आये थे, मनुष्य ही समझा । भयभीत हुए अपने समुदाय के दुर्व्यवहार तथा उद्दण्डता के कारण कि इन सुन्दर अतिथियों के आगमन का ज्ञान यदि उसे हो गया तो वह उनसे वलपूर्वक अभद्र व्यवहार करेंगे, जिससे मेरा अपमान होगा । ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا यह संकेत है असमर्थता से । जैसे ضَاقَتْ يَدُهُ (हाथ का तंग होना) संकेत है निर्धनता से । अर्थात इन सुन्दर आकर्षक अतिथियों को कुकर्मी सुमदाय से बचाने का कोई साधन उन्हें समझ में नहीं आ रहा था, जिससे वह दुखी तथा दिल ही दिल में शोकग्रस्त थे ।

[3]फ़रिश्तों ने आदरणीय लूत की यह चिन्ता तथा शोक एवं दुख देखा तो उन्हें सांत्वना दी तथा कहा कि आप किसी प्रकार से दुखी अथवा भयभीत न हों, हम अल्लाह की ओर से भेजे गये फ़रिश्ते हैं । हमारा उद्देश्य आपको तथा आपके परिवार वालों को अपकी पत्नी के सिवाय सुरक्षा दिलाना है ।

إِنَّا مُنزِلُونَ عَلَىٰٓ أَهْلِ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) हम इस बस्ती वालों पर आकाशीय प्रकोप ढाने वाले हैं[1] इस कारण से कि ये उलंघनकारी हो रहे हैं।

وَلَقَد تَّرَكْنَا مِنْهَآ ءَايَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा हमने इस बस्ती को खुली शिक्षा ग्रहण करने के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया[2] उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं।[3]

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱرْجُوا۟

(३६) तथा मदयन की[4] ओर (हमने) उनके भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को (भेजा) उन्होंने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की

---

[1]इस आकाशीय प्रकोप से तात्पर्य वही प्रकोप है जिसके द्वारा लूत के समुदाय को ध्वंस किया गया। कहा जाता है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम उनकी बस्तियों को धरती से उखाड़कर आकाश की ऊँचाई तक ले गये फिर उनको उन ही पर उलटा दिया गया। उसके पश्चात कंकड़-पत्थर की वर्षा की गयी तथा उस स्थान को अति दुर्गन्धित झील में परिवर्तित कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात पत्थरों के वे अवशेष जिनकी वर्षा उन पर की गयी, काला दुर्गन्धित पानीं तथा उल्टी हुई बस्तियाँ, ये सभी शिक्षा ग्रहण करने की निशानियाँ हैं। परन्तु किन के लिए ? बुद्धिमानों के लिए।

[3]इसलिए कि वही बातों पर विचार करते हैं, कारणों तथा कारकों का विश्लेषण करते हैं तथा परिणाम एवं लक्षण को देखते हैं, परन्तु जो लोग बुद्धि एवं समझ से वंचित होते हैं, उन्हें इन वस्तुओं से क्या सम्बन्ध ? वे तो उन पशुओं के समान हैं जिन्हें वध के लिए वधशाला ले जाया जाता है परन्तु उन्हें आभास तक नहीं होता। इसमें मक्का के मूर्तिपूजकों के लिए भी चेतावनी है कि वे भी झुठलाने तथा विरोध का मार्ग अपनाकर उसी मूर्खता एवं असतर्कता का प्रदर्शन कर रहे हैं, जो बुद्धि एवं समझ से वंचित लोगों का व्यवहार है।

[4]मदयन आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पुत्र का नाम था, कुछ के निकट यह उनके पौत्र का नाम है, पुत्र का नाम मदयान था। उन ही के नाम पर उस क़बीले (गोत्त) का नाम पड़ गया, जो उन ही के वंश पर सम्मिलित था। इसी मदयन क़बीले की ओर आदरणीय शुऐब अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा गया। कुछ कहते हैं कि मदयन नगर का नाम था यह क़बीला अथवा नगर लूत अलैहिस्सलाम की बस्ती के निकट ही था।

ٱلۡيَوۡمَ ٱلۡأٓخِرَ وَلَا تَعۡثَوۡاْ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُفۡسِدِينَ ۝٣٦

इबादत (वंदना) करो, क़ियामत (प्रलय) के दिन की आशा रखो[1] तथा धरती में उपद्रव न फैलाते फिरो ।[2]

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتۡهُمُ ٱلرَّجۡفَةُ فَأَصۡبَحُواْ فِي دَارِهِمۡ جَٰثِمِينَ ۝٣٧

(३७) फिर भी उन्होंने उन्हें झुठलाया, अन्त में उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया तथा वे अपने घरों में बैठे के बैठे मृत होकर रह गये ।[3]

وَعَادٗا وَثَمُودَاْ وَقَد تَّبَيَّنَ لَكُم مِّن مَّسَٰكِنِهِمۡۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ أَعۡمَٰلَهُمۡ فَصَدَّهُمۡ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَكَانُواْ مُسۡتَبۡصِرِينَ ۝٣٨

(३८) तथा हमने 'आद वालों' तथा 'समूद वालों' को भी (ध्वस्त किया) जिनके कुछ खण्डहर तुम्हारे समक्ष विद्यमान हैं ,[4] तथा शैतान ने उनके कुकर्मों को सुसज्जित करके दिखाया था तथा उन्हें मार्ग से रोक दिया था इसके उपरान्त कि यह आँखों वाले तथा चतुर थे ।[5]

---

[1]अल्लाह की इबादत के पश्चात उन्हें आख़िरत की याद दिलायी गयी या तो इसलिए कि वे आख़िरत (परलोक) पर विश्वास नहीं करते थे, अथवा इसलिए कि वे उसे भूल गये थे तथा पापों में लीन थे तथा जो समाज आख़िरत को भूल जाये वह पाप में निर्भीक हो जाता है, जैसे आजकल मुसलमानों के बहुमत का हाल है ।

[2]नाप-तौल में कमी तथा लोगों को कम देना, यह रोग सामान्य रूप से व्याप्त था तथा पाप करने में भी उन्हें भय नहीं था, जिससे धरती पर आतंक व्याप्त हो गया था ।

[3]आदरणीय शुऐब अलैहिस्सलाम की बातों एवं भाषण का उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ । अन्त में बादलों की छाया वाले दिन जिब्रील की एक तीव्र चीख़ से धरती में कम्पन उत्पन्न हुआ, जिससे उनके दिल उछलकर आँखों में आ गये तथा उनकी मृत्यु हो गयी और वे घुटनों के बल बैठे के बैठे रह गये ।

[4]आद के समुदाय की बस्ती अहक़ाफ़, हद्रमूत (यमन के लाल सागर का तटीय भाग) के निकट तथा समूद की बस्ती हिज्र जिसे आजकल मदायन स्वालेह कहते हैं, हिजाज़ के उत्तर में है । इन क्षेत्रों से अरबों की व्यवपारिक यात्रायें हुआ करती थीं, इसलिए ये बस्तियाँ उनके लिए अपरिचित नहीं बल्कि परिचित थीं ।

[5]अर्थात थे वे बुद्धिमान एवं चतुर । परन्तु धर्म के विषय में उन्होंने अपनी बुद्धि एवं समझ का प्रयोग नहीं किया । इसलिए यह बुद्धि एवं समझ उनके काम न आयी ।

(३९) तथा क़ारून, फ़िरऔन तथा हामान को भी, उनके पास (आदरणीय) मूसा खुले-खुले चमत्कार लेकर आये थे,[1] फिर भी उन्होंने धरती पर घमण्ड किया परन्तु हमसे आगे बढ़ने वाले न हो सके।[2]

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ﴿٣٩﴾

(४०) फिर तो हमने प्रत्येक को उसके पाप की आपदा में धर लिया,[3] उनमें से कुछ पर हमने पत्थरों की वर्षा की,[4] उनमें से कुछ को तीव्र ध्वनि ने दबोच लिया,[5] उनमें से कुछ को हमने धरती में धंसा दिया[6] तथा

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ

---

[1]अर्थात प्रमाण एवं चमत्कार का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तथा निरन्तर अहंकारी बने रहे, अर्थात ईमान तथा अल्लाह के भय के मार्ग को अपनाने से विमुख हुए।

[2]अर्थात हमारी पकड़ से बचकर नहीं जा सके तथा हमारी यातना की पकड़ में आकर ही रहे। एक अन्य अनुवाद है "यह कुफ़्र में बढ़ने वाले नहीं थे" बल्कि उनसे पूर्व भी बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं, जिन्होंने उसी प्रकार कुफ़्र तथा अहंकार का मार्ग अपनाये रखा।

[3]अर्थात इन वर्णित में से प्रत्येक की, उनके पापों के कारण हमने पकड़ की।

[4]यह आद का समुदाय था, जिस पर अति तीव्र हवाओं का प्रकोप आया। ये हवायें धरती से कंकरियाँ उड़ाकर उन पर बरसातीं। अन्त में उनकी तीव्रता इतनी बढ़ी कि उन्हें उड़ाकर आकाश तक ले जातीं तथा उन्हें सिर के बल दे मारतीं, जिससे उनके सिर अलग तथा धड़ अलग हो जाते जैसेकि वे खजूर के खोखले तने हैं। (इब्ने कसीर) कुछ व्याख्याकारों ने حاصبا का चरितार्थ लूत के समुदाय को बताया है। परन्तु इमाम इब्ने कसीर ने इसे सही नहीं माना है तथा आदरणीय इब्ने अब्बास की ओर सम्बन्धित कथन को क्रमान्तर बताया है।

[5]यह आदरणीय स्वालेह का समुदाय समूद है, जिन्हें उनके कहने पर पत्थर की एक चट्टान से ऊँटनी निकाल कर दिखायी गयी। परन्तु उन अत्याचारियों ने ईमान लाने के बजाये उस ऊँटनी को ही मार डाला, जिसके तीन दिन के पश्चात उन पर तीव्र चिंघाड़ का प्रकोप आया, जिसने उनकी आवाज़ तथा चाल को शान्त कर दिया।

[6]यह क़ारून है जिसे धन-द्रव्य के कोष प्रदान किये गये थे। परन्तु यह इस गर्व में लिप्त हो गया कि वह धन-धान्य इस बात का प्रमाण है कि मैं अल्लाह के यहाँ सम्मानित तथा

مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝٤٠

उनमें से कुछ को हमने पानी में डुबो दिया,[1] अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करे बल्कि वही लोग अपने प्राणों पर अत्याचार करते थे।[2]

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝٤١

(४१) जिन लोगों ने अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य को कार्यक्षम (देवता) निर्धारित कर रखा है, उनका उदाहरण मकड़ी के समान है कि वह भी एक घर बनाती है, यद्यपि सभी घरों से अधिक कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही है[3] काश, कि वे जान लेते।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ

(४२) अल्लाह (तआला) उन सभी वस्तुओं को जानता है जिन्हें वह उसके अतिरिक्त

आदरणीय हूँ, मुझे मूसा की बात को स्वीकार करने की क्या आवश्यकता है ? अत: उसे उसके कोषों तथा महलों सहित धरती में धंसा दिया गया।

[1]यह फ़िरऔन है जो मिस्र देश का राजा था, परन्तु सीमा उल्लंघन करके अपने आपको भगवान (उपास्य) घोषित कर दिया आदरणीय मूसा पर ईमान लाने से तथा उनके समुदाय इस्राईल की सन्तान को, जिसको उसने दास बना रखा था, स्वतन्त्र करने से इंकार कर दिया। अन्त में एक प्रात: उसको उसकी सम्पूर्ण सेना सहित लाल सागर (कुल्ज़ुम) में डुबो दिया गया।

[2]अर्थात अल्लाह का गुण नहीं कि वह अत्याचार करे। इसलिए पूर्वकालीन समुदाय, जिन पर प्रकोप आया, मात्र इसलिए ध्वंस हुए कि कुफ्र एवं शिर्क तथा झुठलाने एवं पाप जैसे कर्म करके उन्होंने स्वयं ही अपने प्राणों पर अत्याचार किया था।

[3]अर्थात जिस प्रकार मकड़ी का जाला (घर) अत्यन्त क्षीण तथा अस्थाई होता है, हाथ के तनिक संकेत से वह नष्ट हो जाता है, अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों को अपना कार्यक्षम तथा कष्टनिवारक, समझना भी बिल्कुल उसी के समान है, अर्थात सर्वथा व्यर्थ है, क्योंकि वे भी किसी के काम नहीं आ सकते। इसलिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के सहारे भी मकड़ी के जाले के समान सर्वथा अस्थाई हैं। यदि यह सुदृढ़ तथा लाभप्रद होते तो यह देवता पूर्वकालीन समुदायों को बचा लेते परन्तु दुनिया ने देख लिया कि वे उन्हें नहीं बचा सके।

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾

पुकार रहे हैं, तथा वह अत्यन्त प्रभावशाली एवं तत्वज्ञ है।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा हम इन उदाहरणों को लोगों के लिए वर्णन कर रहे हैं,[1] तथा इन्हें केवल ज्ञान वाले ही समझते हैं।[2]

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) अल्लाह तआला ने आकाशों तथा धरती को हित तथा सत्य के साथ पैदा किया है,[3] ईमानवालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी निशानी (प्रमाण) है।[4]

---

[1]अर्थात उन्हें असतर्कता के स्वप्न से जागृत करने, शिर्क की वास्तविकता से सचेत करने तथा मार्गदर्शन सुझाने के लिए।

[2]इस ज्ञान से तात्पर्य अल्लाह का, उसके धार्मिक विधानों का तथा उन आयतों एवं तर्कों का ज्ञान है जिन पर विचार तथा चिन्तन-मनन करने से मनुष्य को अल्लाह का ज्ञान प्राप्त होती है तथा प्रकाश का मार्ग प्रशस्त होता है।

[3]अर्थात व्यर्थ तथा बिना उद्देश्य के नहीं।

[4]अर्थात अल्लाह के अस्तित्व, उसके सामर्थ्य तथा ज्ञान एवं नीति की। तथा फिर उसी प्रमाण से वह इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि सृष्टि में उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, कोई आवश्यकता पूर्ति करने वाला तथा संकटहारी नहीं।